विषय सूची

अध्याय 1. लेखक के बारे में। 1
(About the Author)
अध्याय 2. उद्देश्य। 4
(Purpose)
अध्याय 3. शिक्षा क्या है 8
(What is Education?)
अध्याय 4. सोच क्या है? 12
(What is thinking?)
अध्याय 5. सपने क्या है? 14
(What are dreams?)
अध्याय 6. सपनों के गुलाम? 16
(Slaves of dreams)
अध्याय 7. भटकाव क्या है ? 19
(What is distraction?)
अध्याय 8. सकारात्मकता क्या है? 22
(What is positivity?)
अध्याय 9. नकारात्मकता क्या है? 24
(What is negativity?)
अध्याय 10. आत्मविश्वास क्या है? 27
(What is confidence?)
अध्याय 11. रिस्क क्या है? 29
(What is risk?)
अध्याय 12. फिक्स क्या है? 31
(What is the fix?)

अध्याय 13. नौकरी क्या है? 33
(What is the job?)

अध्याय14. व्यापार क्या है? 36
(What is business?)

अध्याय 15. निर्णय क्या है? 39
(What is the decision?)

अध्याय 16. संकल्प क्या है? 42
(What is resolution?)

अध्याय17. अवसर क्या है? 45
(What is the occasion?)

अध्याय 18.   आजादी क्या है? 48
(What is freedom?

अध्याय 19. सफलता क्या है? 50
(What is success?)

अध्याय 20.   सफल बनने के लिए क्या करे। 53
(What to do to be Successful)

अध्याय 21.   सफलता मैं शुरू करने का महत्व। 56
(Importance of Starting in Success)

अध्याय 22.   असफलता क्या है? 60
(What is failure?)

अध्याय 23.   हम क्या कर रहे है? 63
(What are we doing?)

अध्याय 24.   कल क्या होगा? 66
(What will happen tomorrow?)

अध्याय25. मानव दिमाग की ताकत 69
(The power of the human mind)

अध्याय 26. काम पर ध्यान। 73
(Focus on work)

अध्याय 27. कार्य की स्वतंत्रता। 76
(Freedom of action)

अध्याय 28. काम की संपूर्ण शिक्षा जरूरी। 79
(Complete work education is necessary)

अध्याय 29. मैं किताब नहीं कमाई हूं मैं कमाई क्या है। 82
(I am not earning a book, what am I earning)

शुभकामनाएं। 90

अध्याय 1
लेखक के बारे मैं।
(About the Author)
हिम्मत सिंह राठौड

युवाओं के आर्थिक और मानसिक रूप से संघर्ष करने का मुख्य कारण यह है कि उन्होंने शिक्षा का मतलब केवल किताब पढ़ना सिखा है जिस शिक्षा का मतलब उनके भविष्य में उनको आर्थिक आजादी दिलाना है जिससे वह आगे जाकर बहुत अच्छा पैसा कमा कर अपने आप को आर्थिक और मानसिक आजादी दे सके ऐसा वह नहीं सीख पाते हैं ऐसा राठौड़ का कहना है।

सन 1995 को राठौड़ का जन्म छोटे से गांव सानियाँ में हुआ है राठौड़ एक हिंदू भारतीय हैं इनकी संपूर्ण शिक्षा इन के निकटवर्ती छोटे कस्बे, खुनखुना, डीडवाना और सीकर आदि क्षेत्र से हुई है मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे राठौड़ ने अपनी 12वीं कक्षा पास करते ही सरकारी नौकरियों में प्रयास करना चालू कर दिया राठौड़ अपनी संपूर्ण शिक्षा में उत्तम अंकों के साथ सफल हुए शिक्षा में होनहार होने की वजह से इन्होंने

सरकारी नौकरियों की सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण की और सफल भी रहे ।

लेकिन 95% सभी सरकारी भर्तियों में सफलता के बाद राठौड़ सरकारी नौकरी में ज्वाइन नहीं हो पाए पांच प्रतिशत असफलता जो मेरिट लिस्ट होती है

इस पांच प्रतिशत असफलता का कारण लेखक कभी समझ नहीं पाए और अच्छी शिक्षा एंड होनहार गुणवत्ता रखने के बावजूद राठौड़ सरकारी नौकरी में असफलता से आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल नहीं हो पाए।

राठौड़ के पिताश्री प्रहलाद सिंह राठौड़ जी सदैव राठौड़ को शिक्षा के साथ कुछ कमाने की प्रेरणा देते रहे जो सदैव राठौड़ को अपनी शिक्षा में बाधा लगती थी राठौड़ शिक्षा के साथ कमाने को शिक्षा में असफलता का कारण समझते थे और अपने पिता की इस प्रेरणा को सदैव अनदेखा करते रहे।

लेकिन जब बहुत समय तक संघर्ष करते रहने के बावजूद पांच प्रतिशत जिस को कि वह समझ नहीं पाए उसकी वजह से राठौड़ धीरे-धीरे अपने आर्थिक और मानसिक संघर्ष की असफलता से अपने पिता की प्रेरणा शिक्षा के साथ कमाई पर विचार करने लगे और धीरे-धीरे राठौड़ को अपने पिता की प्रेरणा शिक्षा के साथ कमाई बहुत अच्छे से प्रभावित करने लगी और एक समय बाद राठौड़ ने शिक्षा के साथ कमाई को अपने जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता समझते हुए कमाई के लिए अपनी राजधानी जयपुर जाने का निर्णय लिया।

और 2 अक्टूबर 2015 को राठौड़ अपने प्रिय गांव सानियाँ को छोड़कर अपने माता-पिता का आशीर्वाद लेकर राजधानी

जयपुर में जा बसे और उसके बाद राठौड़ ने कुछ समय प्राइवेट नौकरी कर अपना खुद का बड़ा व्यापार शुरू किया लेकिन राठौड़ के पास पर्याप्त कमाई का साधन नहीं होने की वजह से उन्हें शिक्षा को मजबूरन छोड़ना पड़ा।

राठौड़ शिक्षा को छोड़ने के बावजूद अपने व्यापार में भी सदैव अग्रिम रहे और मात्र 27 साल की उम्र में एक सफल बिजनेसमैन बने और मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म होने के बावजूद अपने पिता की प्रेरणा शिक्षा के साथ कमाई से प्रभावित होने और अपने पिता की प्रेरणा का अनुसरण करने की वजह से आज राठौड़ अपने आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल रहे।

राठौड़ अपनी संपूर्ण सफलता का श्रेय अपने पिता और उनकी प्रेरणा को देते हैं बेरोजगारी के इस दौर में आर्थिक और मानसिक रूप से संघर्ष में आज लाखों युवाओं की असफलता को देखते हुए आज लेखक ने अपने जीवन के अनुभव में अपनी सफलताएं और असफलताओं को अपने व्यापार से जोड़ते हुए राठौड़ ने अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' की रचना की।

और इस किताब को खरीदने पढ़ने और अनुसरण करने वालों के लिए लेखक ने उनके आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता की गारंटी का दावा भी किया है आर्थिक व मानसिक असफलता के दौर में राठौड़ की रचना में किताब नहीं कमाई हूं अनमोल है।

अध्याय 2
उद्देश्य।
(Purpose)

राठौड़ द्वारा रचित किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' का मुख्य उद्देश्य युवाओं और बेरोजगारों को आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता दिलवाना है और शिक्षा के साथ शिक्षा को ना छोड़ते हुए कमाई करवाना है।

लेखक कहते हैं कि मैं किताब नहीं कमाई हूं को आप खरीद कर पूरा पढ़ते हैं और अनुसरण करते हैं तो आप अपने जीवन में बहुत अच्छी पूंजी जमा कर सकते हैं लेखक का उद्देश्य किताब को हर भारतीय के हाथ में पहुंचाना है और उन्हें किताब पढ़ने के साथ एक अच्छी पूंजी की कमाई कराना है।

हर भारतीय के हाथ में यह किताब पहुंचाने में यदि आप राठौड़ की मदद करते हैं तो राठौड़ आपसे मैं किताब नहीं कमाई हूं को खरीदने के बाद आप की कमाई का भी दावा करते हैं शिक्षा का वास्तविक अर्थ संस्कारों को विकसित करना और एक अच्छी

शिक्षा संपूर्ण करने के बाद एक अच्छी पूंजी और धन अर्जित कर अपने जीवन को उत्तम श्रेणी में जीना है।

लेकिन आज के समय में हम शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक अच्छी पूंजी निवेश कर रहे हैं लेकिन एक अच्छी धनराशि अर्जित करने की हमारे पास कोई स्पष्टता नहीं होती है जिसके कारण धन की कमी होने से आर्थिक संघर्ष में हम सफल नहीं हो पाते हैं और जिस का संपूर्ण प्रभाव हमारे शिक्षा द्वारा प्राप्त संस्कारों पर भी पड़ता है।

अतः लेखक का मुख्य उद्देश्य शिक्षा संस्कार और आर्थिक स्थिति का संतुलन बनाए रखना है आज युवाओं में कम उम्र में ही शिक्षा समाप्ति के बाद अच्छी नौकरी नहीं लगने या सफल नहीं होने पर नकारात्मक भावनाएं पैदा हो रही है जिससे आत्महत्या जैसे कई पहलू हमें युवाओं में देखने को मिल रहे हैं जो हमारे देश और समाज के लिए बहुत ही घातक है।

मैं किताब नहीं कमाई हूं का मुख्य उद्देश्य आज के युवाओं और बेरोजगारी से परेशान लोगों में सकारात्मक सोच विकसित कर उनके जीवन में उमंग भरना है आज हमारे देश में जिन युवाओं के माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं है या कम पढ़े लिखे हैं उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में बहुत सारी दुविधाए का सामना करना पड़ता है।

उन्हें एक सही दिशा नहीं मिल पाती है एक छोटी सी असफलता होने पर उनके जीवन में बहुत बड़ा संकट पैदा हो जाता है और उनकी आगे की शिक्षा खतरे में आ जाती है जिससे युवाओं का मानसिक संतुलन बिगड़ने लगता है और धीरे-धीरे असफलता को ही अपनी किस्मत और भाग्य समझने लगते हैं और असफलता को स्वीकार कर लेते हैं मैं किताब नहीं कमाई हूं

का मुख्य उद्देश्य युवाओं को आगे बढ़ाना है और इनकी सफलता और उनके आत्मविश्वास में उत्साह है लाना है।

आज हमारे हिंदुस्तान में बहुत सारे विद्यार्थी ऐसे हैं जिनकी शिक्षा के लिए उनके माता-पिता को उनकी अच्छी शिक्षा के लिए कर्ज लेना पड़ता है जिससे जैसे-जैसे उनकी शिक्षा आगे बढ़ती है वैसे-वैसे उनके माता पिता का कर्ज बढ़ने लगता है जिस कारण घर और शिक्षालय दोनों जगह विद्यार्थी का मानसिक संतुलन स्थिर नहीं रह पाता है जिस कारण न तो वह एक अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता है और ना ही अपने माता-पिता का अपनी शिक्षा के लिए लिया गया कर्ज चुकाने की क्षमता रख पाता है।

मैं किताब नहीं कमाई हूं का मुख्य उद्देश्य ऐसे विद्यार्थियों और युवाओं को शिक्षा के साथ कमाई कराकर उनके मानसिक स्थिति को संतुलित कर उन्हें सफल बनाना है लेखक का उद्देश्य आप को किताब के माध्यम से मनगढ़ंत कहानियां सुनाकर आप को प्रेरित करना नहीं है न हीं लेखक का उद्देश्य इस किताब के अंदर अनगिनत पेज बनाना है और ना ही एक मोटी लंबी चौड़ी किताब छाप ना लेखक का उद्देश्य है।

लेखक का उद्देश्य है आपके जीवन की सच्चाई को कम शब्दों में प्रदर्शित कर एक छोटी किताब के द्वारा आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा आत्मविश्वास को विकसित कर आप को आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता दिलाना है।

आज के युग में हर युवा को शिक्षा समाप्ति के बाद एक बहुत बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है जिसका नाम है बेरोजगारी आज हर युवा का शिक्षा अर्जित करने का मुख्य उद्देश्य रोजगार पाना है चाहे वह नौकरी हो या व्यापार लेकिन शिक्षा

समाप्ति तक आज के युवा अपने भविष्य के लक्ष्य इस रोजगार पर विचार नहीं कर पाते हैं।

और शिक्षा समाप्ति के बाद जब वह अपनी शिक्षा से जुड़ी हुई नौकरी पाने में सफल नहीं होते हैं तो उनके पास दूसरा कोई उचित विकल्प नहीं होता है जिस कारण आज हमारे देश में युवाओं में नशा और आत्महत्या जैसी भावनाए विकसित हो रही है।

मैं किताब नहीं कमाई हूं का मुख्य उद्देश्य असफल युवाओं को मौका देकर उन्हें इस प्रकार से विकसित करना है जिससे उनकी प्रतिभा से वह बहुत बड़े व्यापार का हिस्सा बन सके।

और उन्हें अलग-अलग क्षेत्र में नौकरी और व्यापार करने के बारे में वास्तविक जानकारी मिल सके इस प्रकार से किताब का संपूर्ण उद्देश्य आज के युवाओं को आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता दिलाना और शिक्षा के साथ अच्छी कमाई करवाना है और युवाओं के अंदर हीन भावनाओं को खत्म कर उन्हें सफल बनाना है।

अध्याय 3
शिक्षा क्या है?
(What is Education?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में कहते हैं शिक्षा हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही प्रणाली है जिसके माध्यम से मानव जीवन में संस्कारों की प्राप्ति होती है और हमें वास्तविक मानव जीवन का पता चलता है शिक्षा मानव जीवन में संस्कार और सभी महत्वपूर्ण गुणों का विकास करती है जिसे हमें अपने समाज और देश में अच्छाई-बुराई , मान-सम्मान ,गलत-सही, जाति-धर्म एवं अन्य बहुत सारी जानकारी मिलती है।

लेकिन आज के युग में युवाओं के लिए शिक्षा का एकमात्र अर्थ अपने जीवन में नौकरी या धन अर्जित करना रह गया है आज हर युवा शिक्षा का मतलब केवल अपनी संपूर्ण शिक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना समझता है और शिक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर एक अच्छी नौकरी पाना ही आज के युवाओं का मुख्य उद्देश्य रह गया है और कहीं ना कहीं इन सब बातों का वास्तविक अर्थ सबको आर्थिक आजादी पाना है।

लेखक कहते हैं कि आज हमारे देश में हर युवा वर्ग शिक्षा को नौकरी समझने लगा है लेकिन बढ़ती जनसंख्या के इस दौर में नौकरी करने के लिए हर जगह सीमित हो चुकी है जिस कारण हम शिक्षा से शत-प्रतिशत सफल हो नौकरी में, ऐसा जरूरी नहीं है।

मैं किताब नहीं कमाई हूं में राठौड़ शिक्षा का वास्तविक अर्थ समाज और देश में अपने संस्कारों में विकास के साथ युवाओं में उनकी प्रतिभा को आगे लाना है।

लेखक कहते हैं शिक्षित युवाओ को कभी नौकरी के बारे में चिंतित नहीं होना चाहिए यदि हम समय के अनुसार शिक्षा का वास्तविक अर्थ समझे और शिक्षा का मतलब केवल अच्छे अंक प्राप्त करना ही नहीं समझे तो हम एक ऐसे शिक्षित युवा भी बन सकते हैं जो अपनी प्रतिभा और कौशल से आने वाले समय में लाखों युवाओं को रोजगार दे सकते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि युवाओं को अपनी शिक्षा के लिए जितना समय निर्धारित है उस निर्धारित समय का 10% समय उन्हें अपनी प्रतिभा कौशल और अपनी शिक्षा के साथ कमाई के लिए भी देना चाहिए।

राठौड़ शिक्षा के बारे में कहते हैं कि युवा यदि अपनी शिक्षा के लिए जो समय और पूंजी निवेश करते हैं उसका 10% समय और पूंजी अपनी प्रतिभा और अपनी कमाई के लिए शुरू से ही करें तो वह युवा अपने जीवन में कभी असफल नहीं हो सकते और उनके आर्थिक और मानसिक संघर्ष में उनकी जीत पक्की हो जाती है ऐसा राठौड़ का दावा है।

राठौड़ कहते हैं शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संपूर्ण देश और समाज का विकास होता है और आज संपूर्ण देश और समाज की रीड की हड्डी नव युवक है।

और आज की शिक्षा प्रणाली में नवयुवक शिक्षा का मतलब केवल नौकरी ही अपना उद्देश्य समझ रहे हैं जिस कारण भविष्य में असफलता मिलने पर आज देश के युवा नशाखोरी और आत्महत्या के शिकार हो रहे हैं ।

अतः राठौड़ कहते हैं हमें हमारी शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना बहुत जरूरी है हमें शिक्षा का मतलब नौकरी या केवल मात्र अच्छे अंक प्राप्त करना ही नहीं रखना है।

बल्कि हमें हमारी प्रतिभा कौशल से कमाई करना सीखना बहुत जरूरी है जिसके लिए हमें अपनी शिक्षा पर खर्च समय और पूंजी का मात्र 10% हिस्सा निकालने की या अतिरिक्त देने की जरूरत है।

यदि हम लेखक के अनुसार बताई गई शिक्षा प्रणाली का अनुसरण करते हैं तो हम आने वाले समय में अपने देश भर में युवाओं को सकारात्मकता आत्मविश्वास और एक अच्छे पूंजीपति के रूप में देख सकते हैं और हम युवाओं में हो रही हीन भावनाओ, नकारात्मकता, नशाखोरी और आत्महत्या जैसी घटनाओं को समाप्त कर सकते हैं।

मैं किताब नहीं कमाई हूं पढ़ने वाले सभी युवाओं और सभी साथियों को राठौड़ यह संदेश देना चाहते हैं कि इस शिक्षा प्रणाली को संपूर्ण देश के युवाओं तक पहुंचाने के लिए मुझे आप जैसे युवा ताकत की आवश्यकता है अतः सभी युवा और सभी साथी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' को अपने आसपास के सभी साथियों तक पहुंचाएं और हम सबको मिलकर इस किताब को देश के

युवाओं और बेरोजगारों तक पहुंचाना है ऐसा हम सबको मिलकर संकल्प लेना है।

किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' के माध्यम से राठौड़ देश के हर युवा को उनके आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता दिलाएंगे यह राठौड़ का संकल्प है।

इस किताब को खरीद कर पढ़ने वाला और अनुसरण करने वाला हर युवा आने वाले समय में बहुत अच्छा शिक्षित और पूंजीपति युवा होगा ऐसा राठौड़ का कहना है।

अपने विचारों की शिक्षा प्रणाली से युवाओं को शिक्षा के साथ कमाई कराना लेखक का यह प्रयास बहुत ही सराहनीय है लेखक कहते हैं कि युवा यदि शिक्षा के साथ कमाई करना सीख सकते हैं तो आने वाले समय में वह कभी आर्थिक और मानसिक स्थिति में कमजोर नहीं होंगे जिनसे उनकी हीन भावनाएं सदा के लिए समाप्त हो जाएगी और भविष्य में एक अच्छी नौकरी या व्यापार करने में सफल होंगे जिससे हमारे समाज और देश में युवा मजबूती आएगी और हमारा समाज और देश युवाओं के साथ विकसित होगा ।

लेखक ने इस प्रकार शिक्षा को अपने जीवन के अनुभव और अपने विचारों से बता कर युवाओं को प्रेरित किया है जो कि बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 4
सोच क्या है?
(What is thinking?)

राठौड़ ने अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अध्याय सोच क्या है के माध्यम से आज के युवाओं की सोच पर अपना अनुभव बताते हुए कहा है कि सोच हमारे जीवन के वर्तमान और भविष्य का चिंतन है हमारे भविष्य को हमारी सोच हमारा चिंतन ही आगे बढ़ाता है लेखक कहते हैं मानव जाति में युवाओं के पास सोच शक्ति से संपूर्ण मानव संसाधनों का विकास होता है राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन में हमारी सफलता और असफलता ने भी हमारी सोच पर निर्भर करती है।

लेखक के अनुसार युवाओं के पास सोचने की शक्ति मानव जाति में सबसे तेज होती है लेकिन आज के युवा अपनी सोच शक्ति का इस्तेमाल नहीं करते हैं और अपने आसपास के लोगों की सोच शक्ति से प्रेरित होकर सही गलत का निर्णय लेकर अपने जीवन में होने वाली भविष्य की सफलताओं से वंचित रह जाते हैं।

लेखक कहते हैं कि आपके जीवन में कभी भी कुछ आगे बढ़ने का मौका मिले तो वहां अपनी खुद की सोच से फैसला लेना चाहिए लेखक ने कहा है कि इतिहास गवाह है जिसने भी अपनी सोच शक्ति का उपयोग किया है वह जीवन में सदैव सफल हुआ है उसके द्वारा ही बड़े अविष्कार हुए हैं लेखक कहते हैं हर मानव प्राणी में सोचने की ताकत एक वैज्ञानिक के बराबर होती है लेकिन हम अपने आसपास के लोगों की सोच को सत्य समझ कर अपनी ताकत का सही उपयोग नहीं कर पाते है

लेखक कहते हैं युवाओं को सदैव अपने वर्तमान और भविष्य में सफल होने के लिए केवल और केवल अपनी सोच को महत्व देना चाहिए इस प्रकार लेखक अपने जीवन के अनुभवों को शेयर करते हुए युवाओं की सोच को उनके भविष्य बनाने में उपयोग करने की प्रेरणा देते हैं।

लेखक ने अपनी सोच के सही उपयोग को आर्थिक और मानसिक आजादी का समाधान भी बताया है राठौड़ कहते हैं सोच मनुष्य को अपने जीवन में आगे बढ़ाती है और अपनी सोच ही मनुष्य को जीवन में पीछे धकेलती है आज के युग में हर मानव प्राणी को अपनी सोच पर अध्ययन करना चाहिए और अपनी सोच की शक्ति को पहचाना चाहिए।

लेखक कहते हैं आप अपने जीवन के हर काम और फैसले में अपनी स्वयं कि सोच शक्ति का उपयोग करते हैं तो जीवन में आपको कभी कोई किसी क्षेत्र में हरा नहीं सकता अपनी सही सोच शक्ति कि ताकत से आप जीवन में हर जगह सफल होंगे लेखक ऐसा दावा करते हैं।

अध्याय 5
सपने क्या है?
(What are dreams?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अध्याय सपने क्या है मैं आज के युवाओं को सपनों के बारे में प्रेरणा देना चाहते हैं सपने मानव जीवन की उनके भविष्य की एक रचना होती है जो हर युवा और हर प्रकार के मनुष्य में होती है ।

लेखक कहते हैं कि यदि आपके जीवन में कोई सपना नहीं है तो आपका जीवन जीना व्यर्थ है लेखक मनुष्य के सपनों को उनकी सोच से तुलना करते हुए बताते हैं यदि आप अपने जीवन में अच्छी सोच रखते हैं तो आपको अपने भविष्य की अच्छी कल्पनाए प्रतीत होगी जो आपका अच्छा सपना कहलाता है।

लेखक कहते हैं सपना देखना बहुत अच्छी बात है लेकिन सपने को सपना समझ कर भूल जाना और उसमें आगे नहीं बढ़ना यह हमारे जीवन की सबसे बड़ी हार होती है सोच शक्ति मैं जिस प्रकार आप अपनी सोच का अपने अनुसार प्रयोग करते हैं तो आप जीवन में हर जगह सफल होते है ।

और यदि आप अपने सपने को साकार करने के लिए अपनी खुद की ताकत लगाते हैं और उस सपने को पूरा करने की ठान लेते हैं तो आप अपने जीवन का हर सपना पूरा कर सकते हैं लेखक सपने के बारे में यह कहते हैं कि यदि आप सपना अपने जीवन प्रक्रिया के अनुरूप देखते हैं तो वह आपका सपना होता है जिसे आप पूरा कर सकते हैं।

लेकिन राठौड़ यह कहते हैं कि यदि आप दूसरे के जीवन को देख कर उसके अनुसार उसकी तरह के सपनों की कल्पना करते हैं तो वह आपका सपना नहीं वह आपकी लालसा और अनावश्यक इच्छाएं बन जाती है। इस प्रकार लेखक हमें सपने के बारे में बताते हैं सपना सदैव देखना चाहिए लेकिन वह अपने अनुकूल और अपनी स्थिति के अनुसार होना जरूरी है।

जैसे लेखक उदाहरण देते हैं कि यदि कोई मानव विकलांग है जिसके दोनों पैर नहीं है और उसका सपना यदि ट्राई साइकिल या स्कूटी चलाने का हो या लाने का हो तो यह उसका सपना होता है जिसे वह पूरा कर सकता है।

लेकिन वह मनुष्य अन्य लोगों को साधारण साइकिल मोटरसाइकिल या कार चलाते हुए देखता है और उन्हें अपना सपना समझता है तो वह सपना उसकी स्थिति के प्रतिकूल है वह दूसरों को देखकर एक इच्छा जाहिर कर सकता है लेकिन वह सपना पूरा करना बहुत मुश्किल या असम्भव हो सकता है इसलिए इससे हमें यह समझना चाहिए कि हमारा सपना क्या है।

इस प्रकार लेखक सपने के बारे में बताते हुए सपना कैसा होना चाहिए और उसमें अपने अनुकूल और प्रतिकूल सपनों के बारे में बताते हुए सफलता और असफलता के सपने के पूरे होने या नहीं होने की व्याख्या की है।

अध्याय 6
सपनों के गुलाम?
(Slaves of dreams?)

राठौड ने अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय सपनों के गुलाम को बहुत महत्वपूर्ण बताया है आज हमारे युवा पीढ़ी के लोग बहुत ज्यादा इस अध्याय से प्रभावित है राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में सपनों के गुलाम अध्याय में यह बताते हैं कि आज हर मानव प्राणी अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी में भागे जा रहा है वह अपनी शक्ति को अपने जोश जुनून और अपनी ऊर्जा को किसी ऐसी जगह लगा देता है जो उसके बिल्कुल प्रतिकूल है और फिर निरंतर असफलता प्राप्त करता रहता है।

कई बार हम अपने जीवन में अपने आसपास के लोगों अपने दोस्त रिश्तेदार या कोई अन्य जो किसी अपने क्षेत्र में कार्य करने में सक्षम होते हैं उनसे हम प्रभावित होकर उनके कार्य क्षेत्र में काम करने लग जाते हैं और उस कार्य में हमें लाखों करोड़ों रुपए कमाने का सपना दिखाया जाता है।

राठौड़ कहते हैं यदि हमें लाखों करोड़ों का सपना दिखाया जाता है और हम वहां कार्य करते रहते हैं जहां वह सपना अपना नहीं होता है, किसी दूसरे के द्वारा दिखाया गया सपना कभी अपना नहीं हो सकता है और उस सपने में अपनी सफलता की कोई गारंटी या निश्चिता नहीं होती है राठौड़ कहते हैं जब हम इस प्रकार किसी दूसरे के सपने को अपना सपना समझकर बिना सोचे समझे बिना अपनी योग्यता अपने जुनून को समझे वहां केवल सपने की अंतिम छोर लाखों करोड़ों रुपए पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो वहां हम उस सपने के गुलाम बन कर रह जाते हैं क्योंकि उस बड़े पैसे कमाने के सपने को हम देखते रहते हैं और हमारे सामने से हजारों उपलब्धियां चली जाती है जो वास्तविकता में हमारे अनुकूल होती है ।

हमें पैसों को कभी अपना सपना नहीं बनाना चाहिए जहां हमारा सपना केवल और केवल पैसा कमाना होता है वहां हम उस सपने के गुलाम बन जाते हैं क्योंकि जब तक हम वह पैसा नहीं कमा पाते हैं तब तक हम सही गलत का फैसला नहीं कर पाते हैं और इस प्रकार एक अच्छा समय हमारे हाथों से गुजर जाता है ।

राठौड़ उदाहरण के तौर पर कहते हैं कि यदि आप किसी ऐसी कंपनी में ज्वाइन करते हैं जहां सिर्फ आप उस कंपनी के ज्वाइन लोगों की लाखों करोड़ों की इनकम से प्रभावित होते हैं और उनकी लाखों करोड़ों की इनकम को आप अपना सपना बना लेते हैं तो वहां आप कभी सफल नहीं हो सकते हैं।

राठौड़ कहते हैं सपना वह होना चाहिए जिसमें आपकी योग्यता आपकी रूचि आपका विचार और आपका जुनून उस कार्य में हो और यदि ऐसा नहीं होता है और केवल आप लाखों की कमाई को सपना बनाकर वहां काम करते हैं तो वह सपना

आपको अपना गुलाम बना लेता है और आप उस कार्य में कभी सफल नहीं हो पाते हैं।

इस प्रकार राठौड़ कहते हैं यदि आप किसी दूसरे की सफलता को अपना सपना समझकर कार्य करते हैं और उसमें आपको सफलता मिलती नहीं दिखती है आपकी योग्यता वहां काम नहीं कर रही होती है तो आपको अपनी योग्यता के अनुसार कार्य पर फोकस करना चाहिए और उस सपने का गुलाम बन कर वहां समय बर्बाद नहीं करना चाहिए ।

राठौड़ अपने अनुभव से आज के युवाओं को प्रेरणा देते हुए सपनों के गुलाम की व्याख्या करते हैं और आज के इस अध्याय से आज के युवाओं को यह संदेश देना चाहते हैं कि किसी भी दूसरे व्यक्ति के सपने को अपना समझ कर के हमें कार्य नहीं करना चाहिए और कभी भी हमें सपनों के इस प्रकार के गुलाम नहीं बनना चाहिए कि हम उस परिणाम के सपने की वजह से हम हमारा कोई दूसरा अन्य हमारी योग्यता का कार्य नहीं कर पाए।

आज के युवाओं के लिए सपनों के गुलाम के अध्याय में राठौड़ का यह संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 7
भटकाव क्या है ?
(What is distraction?)

राठौड़ अपनी रचना में किताब नहीं कमाई हूं मैं अपने अध्याय भटकाव क्या है के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि मानव जीवन में उनके जीवन काल में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल नहीं होने का एक महत्वपूर्ण कारण उनका भटकाव है|

राठौड़ कहते हैं अपने जीवन में स्थिरता नहीं होने को ही भटकाव करते हैं भटकाव हमारे मन से शुरू होता है और किसी भी कार्य को निरंतर करते रहने की शक्ति को सफलता कहते हैं लेकिन स्थिरता की शक्ति में भटकाव एक वायरस की तरह काम करता है जो हमारी किसी भी कार्य में स्थिरता और सफलता को समाप्त कर देता है|

राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन में यदि हम अपने सपने के किसी भी कार्य को अपने जोश और जुनून के साथ में करते हैं और उसमें स्थिरता रखते हैं तो हम सदैव सफलता की

ओर ही आगे बढ़ते हैं लेकिन हमारे शुरू किए गए कार्य की शुरुआती परिस्थिति कभी-कभी बहुत प्रतिकूल होती है शुरुआती संघर्ष में हम बहुत बार हारने की भावनाओं से ग्रसित होते हैं शुरुआती दौर में हमें जो परेशानियों का सामना करना पड़ता है उसमें हमें बहुत बार उस कार्य को छोड़ने की अभिलाषा होती है और एक समय हमारे मन का भटकाव इतना तीव्र हो जाता है कि हम उस कार्य को छोड़कर किसी अन्य कार्य के बारे में लग जाते हैं।और उस कार्य के लिए किया गया हमारा प्रयास वापस शून्य हो जाता है किया गया सम्पूर्ण प्रयास व्यर्थ चला चला जाता है

राठोड इसे उदाहरण के तौर पर हमें सांप सीढ़ी के गेम की तरह बताते हैं जिसमें आपकी सफलता की सीढ़ी में भटकाव आपके गेम में सांप के मुंह की तरह होता है जो आपको सफलता की सीढ़ी से वापस शून्य पर ले आता है
इस प्रकार जीवन में भटकाव को हमारी असफलताओं का मुख्य कारण बताते हुए हमें सदैव भटकाव से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं और कहते हैं कि अपने जीवन में कोई भी कार्य करें उसमें आप अपनी योग्यता और अपनी रुचि को सम्मिलित करें यदि किसी काम में आपकी योग्यता और रुची पूरी तरह से सक्षम है तो आपको इस कार्य में आगे आने वाली समस्याओं से घबराना नहीं है

राठौड़ कहते हैं यदि आप अपने कार्य पर संपूर्ण शक्ति के साथ लगते हैं और भटकाव जैसे वायरस को दूर रखने की क्षमता रखते हैं तो आपकी इस कार्य में सफलता निश्चित है इस प्रकार राठौड़ आपको अपने जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल होने का दावा करते हैं यदि आप

अपने मन के भटकाव से दूर रहकर मन की स्थिरता पर फोकस करते हैं।

राठौड़ का यह संदेश आज के युवाओं के लिए बहुत ही प्रेरणादायक और सराहनीय है।

अध्याय 8
सकारात्मकता क्या है?
(What is positivity?)

राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय सकारात्मकता क्या है के माध्यम से संदेश देना चाहते हैं कि मानव जीवन काल में आज हर कोई अपनी आर्थिक और मानसिक आजादी के संघर्ष में लगा हुआ है लेकिन इस संघर्ष में हमें सकारात्मकता को समझना बहुत जरूरी है ।

राठौड़ कहते हैं सकारात्मकता मानव के विचारों की एक क्रिया है जो सफल और असफल होने में अपना बहुत योगदान रखती है राठौड़ कहते हैं कि किसी भी काम को करने के लिए हमारे विचारों में सकारात्मकता बहुत जरूरी है सकारात्मकता का गुण सदैव सफलता की ओर लेकर जाता है जिस प्रकार से लेखक ने अपने अध्याय भटकाव क्या है में स्थिरता में भटकाव को वायरस बताया है उसी प्रकार राठौड़ कहते हैं कि सकारात्मकता में नकारात्मक एक बहुत बड़ा वायरस होती है यदि आपके जीवन में आपने सकारात्मकता को बनाए नहीं रखा तो आस-पास की

नकारात्मक विचार धाराएं आपके जीवन की संपूर्ण सफलताओं का विनाश कर सकती है।

इसलिए हमें सदैव सकारात्मक पहलुओं पर विचार करना बहुत जरूरी है जीवन में ऐसी बहुत सी परिस्थितियां होती है जिनमें सकारात्मक विचार धाराएं और नकारात्मक विचार धाराएं एक ही जगह होती है।

उदाहरण में हमें यह बताते हैं कि यदि एक चार पहियों की कार कहीं पर खड़ी हुई है और उसके 2 पहिये पंचर हो रखे हो ओर उस कार के की स्थिति यदि कोई पूछे तो हम यदि उत्तर में यह बोले कि 2 पहिये पंक्चर है तो यह हमारी नकारात्मकता है और हम उस 2 पहियो की पंचर का ध्यान न करके यह बोले कि 2 पहिये पंक्चर नहीं है बिल्कुल सक्षम है तो यह हमारी सकारात्मक सोच होती है।

यहां राठौड़ कहते हैं कि दोनों विचारधाराएं एक ही साथ है हम किस विचारधारा पर फोकस करते हैं यही हमारी सकारात्मकता की पहचान है इस प्रकार राठौड़ सकारात्मकता की सोच को हमेशा अपनी विचारधारा में रखने की प्रेरणा देते हैं और राठौड़ आपको अपने जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल होने का दावा करते हैं यदि आप सकारात्मक सोच से अपने जीवन के हर कार्य और हर फैसले को करते हैं।

सकारात्मकता क्या है पर लेखक का यह संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 9
नकारात्मकता क्या है?
(What is negativity?)

लेखक कहते हैं कि नकारात्मकता हमारे मन का बहुत बड़ा वायरस होता है और इस वायरस को समाप्त करने के लिए हमारे पास सकारात्मक नामक एंटीवायरस होता है जिसको हमें हर समय इंस्टॉल करके रखना चाहिए।

राठौड़ का कहना है नकारात्मकता से कभी घबराना नहीं चाहिए यह एकमात्र विचार है जो सकारात्मक विचार के सामने 1 सेकंड भी नहीं ठहर सकता है राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन में नकारात्मक विचार हमारे आसपास के लोगों से और उनकी क्रियाओं से ही आते हैं किसी भी प्रकार की नकारात्मक भावना आने पर हमें किसी की सलाह है या उपदेश की आवश्यकता नहीं होती है हमें केवल अपने आप को पढ़ना चाहिए और अपनी सोच शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।

यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारे जीवन के संपूर्ण नकारात्मक विचार सकारात्मक विचारों में बदल सकते हैं राठौड़ कहते हैं कि किसी भी लक्ष्य के परिणाम में सदैव सफलता की

उम्मीद रखना भी परिणाम के समय नकारात्मकता का कारण बन सकता है आज के युग में युवाओं में नकारात्मकता इतनी प्रभावी होने लगी है कि बहुत सारे युवा आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेते हैं और इस आत्महत्या का कारण एक तुच्छ नकारात्मक विचार होता है युवाओं में हो रही इस प्रकार की घटनाओं का मुख्य एक और कारण राठौड़ यह भी बताते हैं कि हमारी शिक्षा प्रणाली में युवाओं के भविष्य में आने वाली सफलता और असफलता से कैसे लड़ा जाए ऐसा कोई सिलेबस नहीं होता है।

राठौड़ कहते हैं हमारी शिक्षा प्रणाली हमें केवल अंक प्राप्त करना सिखाती है लेकिन आगे भविष्य में जिन बाधाओं से आपको लड़ना होगा ऐसी शिक्षा आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है जो हमें कहीं पर भी नहीं सिखाई जाती है राठौड़ कहते हैं मैं किताब नहीं कमाई हूं के संपूर्ण अध्याय में आपको आपके जीवन में आगे बढ़ने में आने वाली संपूर्ण परेशानियों और बाधाओं से लड़कर कैसे सफल हो यह सिखाया जाता है।

आपके आसपास से यदि आपके पास किसी प्रकार के नकारात्मक विचार आते हैं तो यह बुरी बात नहीं है लेकिन हमें इन नकारात्मक विचारों को कभी अपने आप पर प्रभावी नहीं होने देना चाहिए हमारे मन की स्थिति सदैव सकारात्मक होनी चाहिए सफलता और असफलता के परिणाम पर हमें कभी शत-प्रतिशत विचार नहीं करना चाहिए हमें सिर्फ हमारे कार्य में प्रयास करते रहना चाहिए ।

आज के युवा किसी भी कार्य को करते हैं तो उसमें शत-प्रतिशत सफल होने का विचार कार्य शुरू करने के वक्त से ही रखने लगते हैं और उस कार्य में परिणाम में असफल होने पर अपने अंदर बहुत बड़ा नकारात्मक विचार उत्पन्न कर आत्महत्या जैसी घटनाओं तक को भी अंजाम दे देते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि हमारे प्रयास के बाद की हर असफलता हमारे साथ एक बहुत बड़ा अनुभव छोड़कर जाती है जो हमें आगे जाकर बहुत बड़ी सफलता दिलाती है राठौड़ कहते हैं कि हर असफलता पर भी हमें सकारात्मक विचार से मनन करना चाहिए क्योंकि आगे बहुत बड़ी सफलता हमारा इंतजार कर रही होती है इस प्रकार हम अपने सकारात्मक विचारों से अपने मन की संपूर्ण नकारात्मकता को समाप्त कर सकते हैं और हमारे जीवन में आने वाले समय में एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार लेखक ने अपने अध्याय नकारात्मकता क्या है, से हमें बहुत अच्छा संदेश दिया है यदि हम इस संदेश के माध्यम से अपने नकारात्मक विचारों को समाप्त करने में सक्षम होते हैं तो राठौड़ आपके आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता का दावा करते हैं ।

नकारात्मकता पर लेखक का यह संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 10
आत्मविश्वास क्या है?
(What is confidence?)

राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय आत्मविश्वास क्या है से आत्मविश्वास पर हमें बहुत बड़ा संदेश देना चाहते हैं ।

राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता या असफलता में आत्मविश्वास की बहुत बड़ी भूमिका होती है, आज युवाओं में अपने कार्य और लक्ष्य के प्रति विश्वास में बहुत बड़ी कमी होती है हम किसी कार्य को जब करना शुरू करते हैं तो बीच में हम बहुत बार उस कार्य को छोड़ने की भावना के शिकार होते हैं उसका सबसे बड़ा कारण होता है हमारे आत्मविश्वास में कमी का होना।

अपने आत्मविश्वास के द्वारा मानव अपने जीवन में कुछ भी हासिल कर सकता है लेखक कहते हैं कि इतिहास में आज तक जितने भी अविष्कार हुए हैं उनका एकमात्र कारण उन इतिहासकारों का आत्मविश्वास ।

राठौड़ उदाहरण के माध्यम से समझाना चाहते हैं कि यदि हम कल्पना करें कि जिसने भी मानव को पृथ्वी से आकाश में उड़ाने के सपने को देखकर हवाई जहाज बनाने का कार्य शुरू किया होगा उसके जीवन में कितनी बार बाधाए आए होगी कितना संघर्ष हुआ होगा कितनी असफलताएं उसको हासिल हुई होगी लेकिन उन महापुरुष के आत्मविश्वास ने एक दिन उनके कार्य को पूरा करके दिखाया और हवाई जहाज का अविष्कार हुआ और मानव आज पृथ्वी से आकाश में उड़ रहा है ।

राठौड़ कहते हैं कि यदि आप यह किताब पढ़ रहे हैं तो इस उदाहरण के जैसा कठिन कार्य आप सभी के जीवन में कोई नहीं कर रहा होगा और आत्मविश्वास के द्वारा ही यदि इतना बड़ा कार्य सफल हो सकता है तो आपके द्वारा शुरू किया गया हर कार्य सफल होगा यदि आप इस प्रकार के आत्मविश्वास से कार्य करते हैं, नहीं है तो उस कार्य में हमारी असफलता निश्चित हो जाती है । मानव जीवन में किसी भी प्रकार के कार्य में शुरुआती बाधाएं निश्चित होती है चाहे कोई भी कार्य छोटा है या बड़ा है, और उन बाधाओं से लड़ने के लिए हमारा आत्म विश्वास एकमात्र समाधान होता है आत्म विश्वास ही एकमात्र संपूर्ण मानव तन की क्रिया है जिसके माध्यम से हम कुछ भी कर सकते हैं।

इस प्रकार यदि आप अपने जीवन का हर कार्य अपने आत्मविश्वास से करते हैं तो आपकी आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता निश्चित है राठौड़ ऐसा दावा करते हैं ।

राठौड़ का अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में आत्मविश्वास पर यह संदेश बहुत ही सराहनीय है

अध्याय 11
रिस्क क्या है?
(What is risk?)

राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय रिस्क क्या है में रिस्क के बारे में युवाओं को बहुत बड़ा संदेश देना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं कि रिस्क एक ऐसी क्रिया है जिसमें सफलता और असफलता दोनों का रहस्य छुपा रहता है रिस्क लेना सही भी है और गलत भी है लेकिन इस सही और गलत का फैसला लेने का अनुभव हमें प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

राठौड़ अपने विषय रिस्क क्या है के माध्यम से मैं किताब नहीं कमाई हूं पढ़ने वाले संपूर्ण युवाओं को रिस्क की सही या गलत होने की स्थिति और पहचान का संदेश देना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं ऐसा कोई कार्य जिसका हमें अनुभव बिल्कुल भी नहीं हो और उस कार्य में हम समय और पैसा दोनों की बड़ी रिस्क लेते हैं तो वह हमारा गलत फैसला होता है और इस स्थिति में हमें असफलता की ओर बढ़ने की ज्यादा संभावना होती है।

लेकिन हमें किसी कार्य में संपूर्ण अनुभव और आत्मविश्वास हो और वहां हमे रिस्क लेनी हो तो इस स्थिति में हमारा रिस्क

लेना सही फैसला होता है और यहां हमारी सफलता की संभावनाएं अधिकतम होती है जीवन में आगे बढ़ने के लिए रिस्क जरूरी है रिस्क हमें हमारे संपूर्ण भय से छुटकारा दिलाती है और जीवन में अनुभव और स्थिति के अनुसार उचित फैसला लेकर रिस्क लेना हमारी सफलता का मार्ग दर्शक होती है।

राठौड़ कहते हैं हमारे जीवन में कभी ऐसा मौका आए जहां समय की रिस्क शून्य हैं यानी ऐसा कार्य जहां आपको समय देने की जरूरत ना हो या बहुत कम हो और आपके जेब खर्चे या एक ऐसी राशि जो आप अपनी फिजूलखर्ची रोककर बचा सकते हैं या आपके बचत राशि का एक छोटा सा हिस्सा हो और उस कार्य में चाहे आपका अनुभव शून्य हो। उस राशि की रिस्क लेनी हो और आपको उस रिस्क कार्य मे आपको शून्य से ज्यादा कुछ भी प्राप्त करने की उपलब्धि मिले तो आपको वह रिस्क जरूर लेनी चाहिए क्योंकि इस प्रकार की रिस्क लेने पर आपकी सफलता या असफलता की संभावनाएं (50-50) % होती है।

जिसमें आप यदि असफल भी होते हैं तो आपके द्वारा ली गई रिस्क राशि से कई गुना आपको अनुभव की प्राप्ति हो जाती है अतः लेखक के अनुसार रिस्क लेना गलत नहीं है रिस्क हमारे जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में बहुत बड़ी भूमिका अदा करती है हमें केवल अपने अनुभव और स्थिति की दशा को समझना आना चाहिए और हमें रिस्क कब लेनी चाहिए और कब नहीं लेनी चाहिए और इसके अंदर सही और गलत के फैसले को यदि हमें चुनना आता है तो रिस्क लेना हमारे जीवन के लिए बहुत बड़ी सफलता का मार्गदर्शक होता है ।

इस प्रकार रिस्क पर लेखक का संदेश बहुत ही प्रेरणादायक और सराहनीय है ।

अध्याय 12
फिक्स क्या है?
(What is the fix?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय फिक्स क्या है के माध्यम से युवाओं को बहुत बड़ा संदेश देना चाहते हैं अपने जीवन की संपूर्ण उपलब्धियों और इच्छाओं को फिक्स दायरे में सोचना या बांधना ही फिक्स होता है।

राठौड़ कहते हैं आज के युवा अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या में अपना सब कुछ फिक्स करना ही अपनी सफलता समझते हैं जैसे कि आज हर मानव अपने जीवन में किसी एक जगह पर काम करना नौकरी करके महीने का फिक्स राशि अर्जित करना एवं अपने जीवन के इस प्रकार के बहुत से कार्य फिक्स करने के प्रति ज्यादा उत्तेजित रहता है।

लेकिन लेखक कहते हैं कि मानव जाति सबसे शक्तिशाली जाति होती है जो बुद्धि बल और विवेक से भरपूर होती है हमारे जीवन में हमें कभी भी किसी फिक्स की आशंका या इच्छा नहीं रखनी चाहिए हमें सदैव कुछ ना कुछ नया सीखना या अर्जित करना चाहिए।

मनुष्य के पास काम करने का अपने जीवन काल की चार अवस्था में एक अवस्था का ही समय बचता है और उस समय को यदि हम फिक्स कर लेते हैं तो हम एक अच्छे जीवन शैली के साथ अपना जीवन यापन नहीं कर पाते हैं हमें सदैव हमारे फिक्स के अलावा भी कुछ ना कुछ करते रहना चाहिए फिक्स हमारे जीवन को एक सीमित जगह फिक्स कर देता है जिसके बाद हम अपना संपूर्ण जीवन उसी फिक्स में व्यतीत कर देते हैं।

यदि आज हमारे पास किसी भी प्रकार की फिक्स नौकरी या फिक्स कमाई है तो अपनी फिक्स राशि का 10% हिस्सा निकालकर हम साथ में और भी बहुत कुछ कर सकते हैं जो हमारे जीवन में हमें बहुत आगे बढ़ाता है और हमारी फिक्स जीवन शैली को परिवर्तित कर एक अच्छे जीवन शैली में बदल देता है।

लेखक कहते हैं हमारे जीवन के सपनों में फिक्स का होना एक बहुत अच्छा विचार और बहुत अच्छा सपना होता है लेकिन फिक्स को हम यदि केवल फिक्स तक ही सीमित कर देते हैं तो वह हमारा विचार शत प्रतिशत सही नहीं होता है जीवन में आगे बढ़ने और एक अच्छी जीवनशैली के साथ जीना ही जीवन है जिसके लिए हमें फिक्स से बाहर भी सोचना बहुत जरूरी है।

इस प्रकार राठौड़ का अपनी किताब में किताब नहीं कमाई हूं मैं फिक्स क्या है के बारे में युवाओं को और संपूर्ण मानव जाति को दिया गया यह संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 13
नौकरी क्या है?
(What is the job?)

राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय नौकरी क्या है के माध्यम से युवाओं को नौकरी पर बहुत अच्छा संदेश देना चाहते हैं लेखक कहते हैं कि आज हर युवा अपने लक्ष्य में नौकरी लेकर चलता है अपनी शिक्षा के बाद में उनका एकमात्र लक्ष्य नौकरी करना होता है।

नौकरी करना कभी भी हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए हमारा लक्ष्य अपने जीवन में सफल होना वह भी आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता होना जरूरी है नौकरी से हम कभी भी शत-प्रतिशत आर्थिक व मानसिक संघर्ष की सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

लेखक कहते हैं कि नौकरी हमें गरीब नहीं रहने देती है लेकिन नौकरी कभी हमें अमीर भी नहीं बना सकती है लेखक कहते हैं कि आज युवा अपनी शिक्षा का वास्तविक अर्थ शिक्षा में अंक प्राप्त करके किसी भी प्रकार की नौकरी की तलाश में लगे

रहते हैं जबकि नौकरी केवल हमारा एक विचार होना चाहिए आज युवा नौकरी को इतना प्रभावी कर चुके हैं कि एक समय बाद यदि वह अपने नौकरी में अनंत प्रयास के बाद यदि सफल नहीं होते हैं तो वह नौकरी ना मिलने की वजह से अपने आप को आत्महत्या जैसी घटनाओं का शिकार भी बना लेते हैं और अपना उज्जवल जीवन नष्ट कर लेते हैं।

लेखक कहते हैं हमारे जीवन के किसी भी कार्य में हमें चाहे कितना भी आत्मविश्वास हो या कितना भी अनुभव हो तब भी हमें हमारे कार्य के परिणाम पर शत-प्रतिशत सफलता के बारे में विचार नहीं करना चाहिए हमें हमारे जीवन में हर असफलता से लड़ना आना चाहिए।

लेखक कहते हैं कि एक अच्छी नौकरी के लिए प्रयास करना अच्छी बात है लेकिन वह प्रयास की जाने वाली अच्छी नौकरी हमें शत-प्रतिशत मिल ही जाए ऐसा सोचना या ऐसा सपना देखना हमारे लिए भविष्य में परिणाम के समय गलत साबित हो सकता है अतः हमें जीवन में अपने समय और अनुभव का कुछ इस्तेमाल उस वक्त के लिए भी करना चाहिए जब हम नौकरी पाने में असफल होते हैं।

शिक्षा का मतलब हमें केवल नौकरी पाना ही नहीं होता है शिक्षा का मतलब हमारी जीवन शैली के संस्कार और हमारी कौशल शक्ति का विकास कर हमें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने और किसी भी क्षेत्र में कार्य कर सफलता दिलाना है।

यदि हम किसी प्रकार की नौकरी कर रहे होते हैं तो हम नौकरी के माध्यम से कभी भी अपने सपने पूरे नहीं कर सकते हैं हमें नौकरी के साथ अपने सपने पूरे करने का अवसर मिले तो उस अवसर को कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए राठौड़ यह कहना

चाहते हैं कि हमारे जीवन के अंदर मानव शक्ति और मानव विचारधाराओं के अंदर हम बहुत सारे कार्य भी एक समय में कर सकते हैं ऐसी हमें शक्ति प्राप्त हुई होती है तो हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए हमारी जीवन के अंदर किसी भी प्रकार की चल रही नौकरी के साथ में हमें जीवन में कुछ आगे बढ़ने का मौका मिले या जीवन में हमारे कमाई और समय का 10% हिस्सा यदि हमें उस नौकरी के अलावा उस कार्य को देना होता है और उसमें हमें बहुत बड़ी उपलब्धि या सफलता नजर आ रही होती है तो हमें कभी भी उस अवसर को छोड़ना नहीं करना चाहिए और हमें तुरंत उस अवसर को पकड़कर हमारे जीवन की सफलता की सीढ़ी के ऊपर कदम रख देना चाहिए।

राठौड़ का अपनी किताब में किताब नहीं कमाई हूं मैं नौकरी पर यह संदेश आज के युवाओं के लिए बहुत ही सराहनीय है

अध्याय14
व्यापार क्या है?
(What is business?)

लेखक अपनी रचना ‘मैं किताब नहीं कमाई हूं’ में अपने अध्याय व्यापार में व्यापार का वास्तविक अर्थ समझाना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं कि जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में व्यापार की भूमिका सबसे बड़ी होती है संपूर्ण विश्व में व्यापार की श्रेणी सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

इस दुनिया में 99% सपने व्यापार से ही पूरे होते हैं व्यापार सदैव एक निर्धारित पूंजी से शुरू होता है जो एक रुपए से लेकर अनंत तक कुछ भी हो सकती है लेकिन कहते हैं कि बिजनेस / व्यापार बहुत सारी श्रेणियों में होते हैं और व्यापार एक ऐसी श्रेणी होती है जिसे इस दुनिया का हर कोई मानव अपनी कौशल क्षमता और अपनी पूंजी के माध्यम से कर सकता है।

लेखक कहते हैं कि व्यापार में सदैव एक रिस्क फैक्टर लगा रहता है आपकी पूंजी जो लगी है वह वापस आए इसकी कोई गारंटी आपको दुनिया का कोई भी व्यापार नहीं दे सकता है।

बिजनेस में सदैव आपको सफलता और असफलता में 50-50% मौका रहता है व्यापार में हमें पूंजी ज्यादा निवेश करनी होती है तो उस व्यापार में हमारा अनुभव होना बहुत जरूरी होता है यदि हम बिना अनुभव के कोई व्यापारिक बड़ी पूंजी के साथ करते हैं तो वह हमें सदैव असफलता की ओर लेकर जाता है।

लेखक कहते हैं कि कोई भी बिजनेस करने के लिए हमें सीखना बहुत जरूरी है क्योंकि बिजनेस सदैव एक पूंजी के साथ में शुरू होता है लेखक कहते हैं कि हमारे जीवन में व्यापार को सीखने के लिए हमें किसी वीडियो ऑडियो कॉन्फ्रेंस मीटिंग बिज़नेस ट्रेनिंग या अन्य कोई व्यापार शिक्षा से संबंधित विषयों से बेहतर होता है हम किसी व्यापार का स्वयं अनुभव लेकर एक छोटी पूंजी जो आपके खर्चों से बचाई जा सके उसके ऊपर हमें वास्तविकता में व्यापार को शुरू करके समझना चाहिए।

राठौड़ कहते हैं कि यदि हमें जीवन में अपने निजी कार्य को ना छोड़ते हुए एक ऐसी पूंजी जो हमारे जेब खर्चे के बराबर या उससे भी कम हो और हमें किसी भी प्रकार का बिजनेस करने का मौका देती है तो हमें वह बिजनेस जरूर शुरू करना चाहिए क्योंकि वहां हमें हमारी निवेश पूंजी से यदि सफलता भी नहीं मिलती है तो हमें उस पूंजी के निवेश से बहुत बड़ा अनुभव मिल जाता है।

इस प्रकार राठौड़ बिजनेस को अपने सपने को पूरा करने की सर्वश्रेष्ठ श्रेणी बताते हुए अपने जीवन में व्यापार को आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता का भी बहुत बड़ा हिस्सा मानते हैं लेखक कहते हैं कि जीवन के अंदर व्यापार एक ऐसी श्रेणी होती है जिसके लिए किसी को भी किसी भी प्रकार की उचित और अंक वाली शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है हम व्यापार को कभी भी कहीं भी किसी भी जगह और किसी भी पूंजी के साथ में

शुरुआत कर सकते हैं इसलिए मानव जीवन काल के अंदर हर मनुष्य को अपने जीवन के अंदर एक छोटा या बड़ा व्यापार अपनी शिक्षा और अपनी नौकरी साथ में जरूर शुरू करना चाहिए।

हमें व्यापार का अनुभव हमारे जीवन की सर्वश्रेष्ठ श्रेणी के अंदर लेकर जाता है इसलिए लेखक व्यापार को इस दुनिया की सबसे बडी श्रेणी और सफल रास्ता बताते हुए हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि आपके जीवन में भी आपको किसी भी प्रकार का छोटा-मोटा व्यापार करने का यदि अवसर मिले तो हमें कभी भी उसे छोड़ना नहीं चाहिए।

इस प्रकार राठौड़ का अपनी किताब में किताब नहीं कमाई हूं मैं व्यापार के बारे में संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 15
निर्णय क्या है?
(What is the decision?)

राठौड़ अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय निर्णय क्या है मैं युवाओं को उनके लिए गए और भविष्य में लेने वाले निर्णय पर अपना अनुभव शेयर करते हुए कहा है कि मानव जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता का एक महत्वपूर्ण योगदान आपके द्वारा लिया गया निर्णय होता है।

निर्णय हमारे जीवन के वह फैसले होते जो हमारे भविष्य का विकास करते हैं और हमारे जीवन में आने वाली सफलता या असफलता का परिणाम भी हमारे द्वारा लिए गए निर्णय पर निर्भर करता है लेखक कहते हैं कि हमें हमारे जीवन में कहीं भी किसी भी प्रकार का निर्णय लेना हो तो हमें वहां केवल और केवल अपनी शक्ति और सामर्थ्य को और अपने अनुभव और अपनी स्थिति को समझते हुए लेना चाहिए।

हमारे जीवन में हमारा द्वारा लेने वाले फैसलों में गलत या सही का निर्णय का अधिकार हमें कभी भी दूसरों को नहीं देना

चाहिए यदि किसी भी प्रकार का निर्णय लेने में हमारे अलावा दूसरे लोगों के द्वारा दिए गए सुझाव और दूसरों के अनुभव से ली गयी सलाह से हम निर्णय लेते हैं तो उन फैसलो मे हमारे पक्ष में होने के अवसर कम होते हैं।

हमें अच्छे अनुभवी लोगों की शिक्षा और सलाह की आवश्यकता हर जगह होती है और हमें अनुभवी लोगों की शिक्षा और सलाह अवश्य लेनी चाहिए लेकिन शिक्षा और सलाह के बाद हमेशा उसमें हमारी स्थिति, रूचि, सामर्थ्य शक्ति और संपूर्ण परिस्थिति देखकर ही निर्णय लेने चाहिए।

एक बार यदि हम सोच समझकर निर्णय ले लेते हैं तो उसमें कभी भी हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए और जब तक हम सफल ना हो तब तक हमें उस निर्णय को अपना भविष्य समझ कर काम करना चाहिए लेखक कहते हैं हमारे द्वारा लिए गए निर्णय हमारा भविष्य निर्धारित करते हैं और यदि कोई अन्य व्यक्ति हमारे निर्णय में फेरबदल करते हैं तो वहां हमारे भविष्य के साथ फेरबदल होते हैं और इस प्रकार हमें सोच समझ कर लिए गए हमारे निर्णय को सदैव आगे रखना चाहिए।

हमारे द्वारा लिए गए निर्णय में हमें कुछ ना कुछ नया सीख कर आगे बढ़ते रहना चाहिए और हमारे लिए गए निर्णय पर ऐसा संकल्प होना चाहिए कि यदि वह गलत भी ले लिया गया हो तो हमारी सामर्थ्य शक्ति और आत्मविश्वास से हम उसे सही साबित करके दिखाएं और हमारी सोच शक्ति और आत्मविश्वास के द्वारा लिया गया निर्णय कभी गलत नहीं होता है और उस निर्णय में हमारी मेहनत और कार्य क्षमता से हम सदैव उस निर्णय में सफल होते हैं।

हमारे द्वारा लिए गए निर्णय और फैसले ही हमारे द्वारा आगे जाकर एक बहुत बड़ा इतिहास बनाते हैं और हमारे फेसले पर ही हमारा भविष्य निर्भर करता है कि हम भविष्य में क्या करने वाले हैं और क्या नहीं करने वाले हैं यह संपूर्ण हमारी एक तरह की भविष्यवाणी जो है वह हमारे निर्णय पर निर्भर होती है
इसलिए हमें हमारे निर्णय पर हमारा आत्मविश्वास, हमारा अनुभव, हमारी सामर्थ्य शक्ति,स्थिति, परिस्थिति, रुचि सब चीजों को एक साथ हमें एकजुट करके सोचना चाहिए ताकि हमारा निर्णय हमारा भविष्य बना सके जिससे हम आने वाले समय में एक बहुत बड़ा इतिहास रच सके और हमारे सारे संपूर्ण सपने पूरे हो सके।

इस प्रकार राठौड़ का निर्णय पर दिया गया यह संदेश बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 16
संकल्प क्या है?
(What is resolution?)

राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में संकल्प क्या है अध्याय द्वारा अपने अनुभव को शेयर करते हुए राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन के आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में संकल्प की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

यदि हम अपने जीवन में सफल होने के लिए किसी भी कार्य को चुनते हैं तो वहां हमारा उस कार्य को करने के प्रति दृढ संकल्प होना बहुत जरूरी है संकल्प मानव जीवन की संपूर्ण शक्तियों को एकजुट करता है संकल्प मनुष्य के आत्मविश्वास उसके द्वारा लिए गए फैसले उसकी सोच शक्ति उसकी रूचि और उसकी कार्य क्षमता एवं समस्त गुणों को एक गुण में बांध देता है जिसे हम संकल्प कहते हैं।

लेखक कहते हैं कि यदि हम किसी कार्य को करने का संकल्प ले लेते हैं तो हमारी ज्ञानेंद्रियों की संपूर्ण शक्तियां एक हो जाती है फिर हमारे ऊपर नकारात्मकता भटकाव आत्मविश्वास में

कमी इन सभी प्रकार की नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव शून्य हो जाता है ।

और अंततः हमें संकल्प लेने के बाद हमें सदैव सफलता ही हासिल होती है किसी भी कार्य के लिए संकल्प लेने के बाद मनुष्य सदैव सकारात्मक तथ्यों से काम करता है संकल्पित मनुष्य को अपने शुरू किए गए कार्य पर शत-प्रतिशत सफलता का एहसास हो जाता है और एक दिन वह अपने उस कार्य में सफलता जरूर पाता है संकल्प लेने का मतलब केवल एक मन की शपथ लेना ही नहीं होता है संकल्प लेने के बाद मनुष्य को उस कार्य को सफल होने में आने वाली बीच की हर बाधाओं से निपटने के लिए बहुत कुछ त्याग भी करना पड़ सकता है संकल्प का मतलब कभी पीछे हटना नहीं होता है संकल्प लेने का मतलब किसी भी कार्य को जो संकल्प के साथ में शुरू किया गया है उसको किसी भी प्रकार से शुरू करना होता है जिसके लिए हमारे जीवन की सुख सुविधाओं को ध्यान में न रखकर कड़ी मेहनत को अंजाम देना होता है ।

इस प्रकार राठौड़ मानव जीवन के उच्चतम गुणों में संकल्प की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि यदि आप अपने संकल्प के गुण को अग्रणी रखते हैं तो आप जीवन में अपने हर असंभव कार्य को भी संभव कर सकते हैं संकल्पित मनुष्य को उसके जीवन में उसके कार्य और उस कार्य की सफलता के अलावा कुछ महत्वपूर्ण नहीं लगता है जब तक कि वह उस कार्य में सफल ना हो जाए।

राठौड़ कहते हैं अपने अंदर संकल्प नाम के गुण का यदि हम विकास करते हैं तो हमारे अंदर स्वतः ही बहुत सारे अच्छे गुणों का विकास हो जाता है जिसकी वजह से हमें जीवन में सदैव विजय प्राप्त होती है ।

इस प्रकार राठौड़ संकल्प के साथ कार्य करने पर अपने जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता का दावा करते हैं।

राठौड़ की रचना में किताब नहीं कमाई हूं मैं राठौड़ की संकल्प पर इस प्रकार से व्याख्या बहुत ही सराहनीय है

अध्याय17
अवसर क्या है?
(What is the occasion?)

राठौड़ की रचना ‘मैं किताब नहीं कमाई हूं’ में अवसर क्या है मैं राठौड़ अपनी किताब के इस अध्याय के माध्यम से युवाओं को प्रेरित करना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं अवसर मानव जीवन में एक एक ऐसी स्थिति या एक ऐसा समय होता है जो मनुष्य को एक ऐसा कार्य देता है जिसमें सफलता के अवसर अधिकतम होते हैं।

अवसर को पाना या खोना यह हमारे हाथ में होता है राठौड़ कहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में अपनी इच्छा और क्षमता से बहुत सारे कार्य करता है जिसमें उसको उसके अनुभव और पूंजी की आवश्यकता होती है जहां उस कार्य में उसके लाभ हानि के परिणाम कुछ भी हो सकते हैं और उस कार्य में उसको सफलता या असफलता कुछ भी हासिल हो सकती है।

लेकिन मानव जीवन में उसके जीवन काल में कई बार ऐसे कार्य हमारे सामने से गुजरते हैं जहां हमें बहुत कुछ पहले से मिला हुआ होता है और हमें उस कार्य में अनुभवी लोगों का बहुत सपोर्ट

मिलता है और उस कार्य को करने के लिए हमें ईश्वर किसी ना किसी को बार-बार भेजता रहता है।

लेकिन हम उस कार्य को नहीं करते हैं जो कि हमारे जीवन में सफल होने का बहुत बड़ा अवसर हो सकता था राठौड़ कहते हैं कि हमें हमारे जीवन में सफल होने के लिए कभी भी अवसरों को नहीं छोड़ना चाहिए अवसर हमारे जीवन में कम मेहनत और पूंजी में सफल होने का भगवान के द्वारा दिया गया एक गिफ्ट या वरदान होता है जिसे हमें समझना और उस कार्य को शुरू करना जरूरी होता है।

अवसर हमारे जीवन में प्राप्त हुए एक गिफ्ट की तरह होते हैं जो हमें हमारे भाग्य और समय के अनुसार मिलते हैं हमारे पास हमें मिले गए अवसरों की पहचान करने की क्षमता होनी चाहिए।

राठौड़ कहते हैं कि हमारे जीवन में ऐसे कार्य जो हमें किसी प्रकार की बड़ी हानि नहीं पहुंचाते हो और वहां हमें सफलता और एक अच्छी धन अर्जित करने का मौका मिल रहा हो तो हमारे जीवन का एक बहुत बड़ा अवसर हो सकता है कि हमारे जीवन में कभी-कभी ऐसे कार्य आते हैं जिसमें हमें बहुत छोटी रिस्क और बहुत बड़ी सफलता नजर आ रही हो तो वह कार्य भी हमारे लिए एक बहुत बड़ा अवसर हो सकता है।

इस प्रकार राठौड़ अपनी किताब के विषय अवसर से युवाओं और समस्त मानव जाति को प्रेरणा देना चाहते हैं कि हमारे जीवन में हमारे आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता प्राप्त करने के लिए हमारे जीवन मे मिले अवसर बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं हमें हमारे जीवन में अवसरों की पहचान कर उनको सदैव प्राप्त करना चाहिए।

राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अवसर क्या है अध्याय की इस प्रकार से व्याख्या कर युवाओं को दिया गया संदेश बहुत ही सराहनीय है

अध्याय 18
आजादी क्या है?
(What is freedom?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अध्याय आजादी क्या है का वास्तविक अर्थ समझा कर युवाओं को प्रेरित करना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं कि किसी भी कार्य में स्वतंत्रता का गुण उसके आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफलता दिलाने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है।

लेखक कहते हैं कि मानव जीवन में शारीरिक आजादी से कई गुना महत्व मानसिक आजादी रखती है मानव को अपने मन की आजादी पर विचार करना बहुत जरूरी है यदि हमारे जीवन में हमारी मानसिक स्थिति में किसी प्रकार की चिंता या नकारात्मकता नहीं हो तो हम जीवन में किसी भी कार्य को करने में सक्षम होते हैं मानसिक आजादी नहीं होने के कारण कोई भी कार्य जिसमें हमारी रुचि हमारा अनुभव और आत्मविश्वास भरपूर होने पर भी हम उस कार्य मे सफलता नहीं प्राप्त कर पाते हैं।

मानव को अपनी मानसिक चेतना पर विचार करना चाहिए हमारे मन में अनगिनत नकारात्मक विचार आते हैं जो किसी भी कार्य को शुरू करने के बाद हमारे अपनों, हमारे दोस्त, रिश्तेदार के द्वारा हमारे तक पहुंचते हैं और यह नकारात्मक विचार हमारे

मन और हमारे मानसिक चिंतन को बार-बार अपनी नकारात्मक शक्तियों में बांधना चाहते हैं जिससे कई बार हमारा मन विचलित हो जाता है और हमारे मन की स्वतंत्रता हम त्याग देते हैं और शुरू किए गए कार्य में हमें सफलता नहीं मिल पाती है अतः हमारे मानसिक चेतन को सदैव नकारात्मक भावनाओं को अनदेखा करते हुए स्वतंत्र रखना चाहिए।

राठौड़ कहते हैं हमारी मानसिक आजादी हमें हमारे जीवन की हर चिंता से दूर करती है जिससे हमारा स्वास्थ्य बिल्कुल सही रहता है और हमारे अंदर किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से सफल बनाने की क्षमता विकसित होती है।

मानसिक आजादी से हम हमारे जीवन के सभी सपनों को पूर्ण रूप से पूरा कर सकते हैं और हमारे द्वारा किसी शुरू किए गए कार्य में जब हम सफल होते हैं तो वहां हमें आर्थिक आजादी भी प्राप्त हो जाती है और हमारा जीवन सदैव ऊंचाइयों की ओर जाता है यदि हमारे पास बहुत सारा धन और सभी सुख सुविधाएं हैं और उसके बावजूद हमारे मन की आजादी हमारे पास नहीं होती है तो हम सदैव अप्रसन्ता का अनुभव करते हैं हमें सदैव अपने मानसिक और आर्थिक आजादी पर कार्यरत रहना चाहिए मनुष्य के जीवन जीने का वास्तविक अर्थ उसकी आर्थिक और मानसिक आजादी है।

इस प्रकार आजादी के इस गुण द्वारा यदि हम मानसिक रूप से स्वतंत्र होकर किसी कार्य को करते हैं तो हमारे आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता सुनिश्चित हो जाती है रा
ठौड़ का अपनी किताब मैं किताब नहीं कमाई हूं में आजादी पर युवाओं को दिया गया यह संदेश बहुत ही सराहनीय ह

अध्याय 19
सफलता क्या है?
(What is success?)

राठौड़ अपनी रचना में 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय सफलता क्या है में सफलता के बारे में युवाओं और समस्त मानव जाति को प्रेरणा देना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं सफलता किसी भी मनुष्य के जीवन में उसके द्वारा जागृत इच्छा की प्राप्ति होती है सफलता का मतलब केवल धन अर्जित करना नहीं होता है सफलता एक मनुष्य के अंदर संपूर्ण अच्छे गुणों का विकास करती है यदि आपकी सफलता में आपके अच्छे गुणों का समापन होकर आपके अंदर बुरे गुणों का विकास हो जाता है तो वह सफल होते हुए भी आपकी सफलता नहीं होती है।

राठौड़ कहते हैं यदि आप किसी ऐसे कार्य में प्रयासरत है जहां आपको एक अच्छा पद और पैसा होता है तो वहां आपकी बहुत अच्छी सफलता होती है लेकिन वहां यदि आपके अंदर पद और

पैसों का अभिमान हो जाता है तो वहां आपकी अच्छी सफलता आपको एक बुरा इंसान बना देती है।

राठौड़ कहते हैं कि यदि हमारे अंदर हम अपने सकारात्मक गुणों का विकास करके किसी कार्य को करते हैं यदि हमें किसी कार्य में सफलता प्राप्त करनी होती है तो हमें हमारे संपूर्ण गुणों का प्रयोग करना चाहिए हमें किसी कार्य के प्रति हमारी लगन मेहनत, अनुभव, और आत्मविश्वास होना जरूरी है और हम इन सभी गुणों के साथ में किसी कार्य को करते हैं तो उस कार्य में हमारी सफलता निश्चित होती है

हमारे जीवन में सफलता का वास्तविक अर्थ केवल आर्थिक रूप से संपूर्ण संपन्न होने के लिए धन अर्जित करना ही नहीं है जबकि हमारी हर सफलता में हमारी आर्थिक और मानसिक दोनों सफलता जरूरी है।

राठौड़ कहते हैं कि एक सफल मनुष्य को जीवन जीने में जो आनंद की अनुभूति होती है वह कभी भी संपूर्ण रूप से सफल नहीं होने वाले व्यक्ति को नहीं हो सकती है सफलता मनुष्य का हर जगह सम्मान बढ़ाती है सफल मनुष्य अपने संपूर्ण जीवन काल में उच्चतम श्रेणी का जीवन जीता है चाहे वह किसी भी धर्म जाति या कुल में जन्म लिया हुआ हो।

लेखक कहते हैं मानव जीवन में सम्पूर्ण सफलता का होना ही वास्तविक जीवन है एक आर्थिक और मानसिक रूप से सफल व्यक्ति इस धरा पर देवताओं की तरह अपना जीवन यापन करता है अतः हमें अपने जीवन में अपने सकारात्मक गुणों का विकास कर अपने किसी भी कार्य को दृढ संकल्प के साथ में पूरा करना चाहिए और तब तक उस कार्य को छोड़ना नहीं चाहिए जब तक हम उस में शत-प्रतिशत सफल ना हो।

इस प्रकार राठौड़ अपने अध्याय सफलता क्या है में युवाओं को उनके वास्तविक जीवन का अर्थ सफलता बताते हुए सफलता के बारे में व्याख्या करते हैं और सफलता पर राठौड़ का यह संदेश संपूर्ण मानव जाति के लिए और युवाओं के लिए प्रेरणादायक है और सराहनीय है।

अध्याय 20
सफल बनने के लिए क्या करे।
(What to do to be Successful)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय सफल बनने के लिए क्या करें के माध्यम से युवाओं को उनकी सफलता के लिए किए जाने वाले प्रयास के बारे में बहुत अच्छा संदेश देना चाहते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि जीवन में हर कोई सफल होना चाहता है जीवन में अपने द्वारा किए गए संपूर्ण कार्य में अपनी शिक्षा में अपने हर निर्णय में मानव सफल होना चाहता है लेकिन लेखक यहां पर यह कहते हैं कि हमें सफल होने के लिए क्या करना होता है और हमें क्या करना चाहिए कि हम हमारे जीवन के अंदर हर कार्य के अंदर सफलता प्राप्त कर सकें।

राठौड़ कहते हैं कि जीवन के अंदर संपूर्ण मानव जाति में हर कोई अपने जीवन की इस भाग दौड़ भरी जीवनशैली के अंदर अपने संपूर्ण कार्य में सफल होने की इच्छा रखते हैं लेकिन मानव सदैव यह भूल जाता है कि हमें सफल होने के लिए कुछ अलग

नियमों का पालन करना पड़ेगा सफल होने के लिए हमें कुछ अलग हटके कुछ काम करना पड़ेगा सफल होने के लिए हमें बहुत सारे सुख सुविधाओं को त्याग करना पड़ेगा यह सब हम लोग नहीं जानते हैं और हमारी सामान्य जीवन शैली के चलते चलते ही हम हमारे संपूर्ण कार्य जो कि कठिन है सरल है उनमें सफल होने की इच्छा जाहिर करते हैं जबकि ऐसा नहीं होता है।

राठौड़ अपनी किताब के इस विषय के माध्यम से हमें यह कहना चाहते हैं कि सफलता के लिए हमें इस दुनिया में इस जीवन में इस संसार में बहुत कुछ त्यागना पड़ता है हमें हमारी नींद हमारा आलस्य हमारी बुरी भावनाएं हमारी नकारात्मक शक्तियां इन सब चीजों से लड़ना पड़ता है इन सब चीजों को त्यागना पड़ता है ।

हमें सफलता पाने के लिए जीवन में जो लोग एक भीड़ की ओर चल रहे होते हैं उनसे हमें अलग चलना पड़ता है भीड़ के अंदर चलने वाले लोगों को देख कर यदी हम किसी कार्य को शुरू कर रहे हैं और उसमें सफल होने की इच्छा करते हैं तो वह हमारा गलत फैसला होता है वहां हम सफलता की ओर ना जाकर एक सामान्य क्रिया के अंदर अपने जीवन को निरंतर बढाते रहते हैं।

जबकि लेखक कहते हैं कि यदि हमें जीवन में सफल होना है तो हमें हमारे आत्मविश्वास को मजबूत करना पड़ेगा हमें हमारे धैर्य को मजबूत करना पड़ेगा हमारे संकल्प को मजबूत करना पड़ेगा हमें जीवन में आने वाली बाधाएं जिनके अंदर हमें बहुत सारी सुख सुविधाएं मिल रही है लेकिन वह हमारे कार्य में बाधा बनती जा रही है तो हमें उन संपूर्ण सुख-सुविधाओं को भी त्यागना पड़ेगा तब हम जीवन में हमारे कार्य में सफल हो सकते हैं।

इस प्रकार राठौड़ अपनी रचना के अंदर बताना चाहते हैं कि सफल बनने के लिए हमें सर्वप्रथम हमारी बड़ी प्लानिंग के साथ में हमारी कार्यशैली को विकसित करना पड़ता है इसके अलावा हमें हमारी संपूर्ण सोच शक्ति सामर्थ्य को पूर्ण रूप से हमारे कार्य पर झोकना पड़ता है और हम किस कार्य को कर रहे हैं उसका भविष्य क्या हो सकता है हमारा उस कार्य के अंदर आत्मविश्वास हमारी इस कार्य में रुचि इन सब गुणों का विकास होना बहुत जरूरी होता है तब हम अपने जीवन के संपूर्ण कार्यों के अंदर सफल हो सकते हैं सफल बन सकते हैं और हम आने वाले समय में एक बहुत ही अच्छे सफल इंसान के रूप में इस दुनिया मे देखे जा सकते हैं।

इस प्रकार राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में सफल बनने के लिए क्या करें इस अध्याय की इस प्रकार से व्याख्या बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 21
सफलता मैं शुरू करने का महत्व।
(Importance of Starting in Success)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय सफलता में शुरू करने का महत्व को समझाते हुए आज के युवाओं को एक बहुत ही बड़ा संदेश देना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं कि अपने जीवन के अंदर जो सफलता नाम का सपना देखते है या एक बहुत बडी उपलब्धि प्राप्त करना चाहते हैं उसके अंदर सबसे महत्वपूर्ण होता है शुरू करना।

राठौड़ कहते हैं कि आप अपने जीवन काल के अंदर किसी भी प्रकार के इतिहास को देखेंगे तो आपको एक ही बात सबसे महत्वपूर्ण नजर आएगी कि इस जीवन में जिसने भी किसी भी कार्य को चाहे वह छोटा हो चाहे बड़े से बड़ा कार्य हो उसको यदि अपने मन और अपने आत्मविश्वास के साथ शुरू किया है वही वहां पर सफल हो पाया है।

आज तक हम लोगों ने जब जब इस इतिहास को पढ़ा है सुना है देखा है हमने यही पाया है कि जिसने भी मैदान में लड़ना या खेलना शुरू किया है उसने ही जीत हासिल की है।

लेखक यह कहना चाहते हैं कि किसी भी काम को शुरू करना ही उसकी सबसे बड़ी सफलता होती है यदि हम किसी काम को उसमे आने वाली बाधाओं के बारे में सोचते हैं या फिर उस काम के परिणाम के बारे में सफल या असफल के बारे में सोचते हैं और उस काम को शुरू ही नहीं कर पाते हैं तो वह हमारी सबसे बड़ी असफलता होती है दुनिया में जिसने भी किसी काम को शुरू किया है जीत उसी की हुई है क्योंकि मैदान के अंदर यदि हमें युद्ध या फिर किसी भी प्रकार का खेल जीतना है तो सबसे पहले जरूरी है कि उसके लिए सबसे पहले तलवार उठाना या फिर मैदान में उतरना ।

इतिहास में आज तक जिसने भी किसी भी काम को या किसी भी बड़ी से बड़ी लड़ाई को शुरू किया है उसने वास्तविकता में अंततः बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की है इसलिए लेखक अपनी इस किताब के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि जीवन में हमारे पास में बहुत सारे ऐसे काम आएंगे बहुत सारे ऐसे अवसर आएंगे बहुत सारी ऐसी उपलब्धियां आएंगी जिनको हम मात्र एक शुरू करने की कमी की वजह से ही बहुत बड़ी भूल कर के छोड़ देंगे या त्याग देंगे।

इसलिए राठौड़ कहते हैं कि अपने जीवन में कभी भी ऐसा मौका मिले या कभी भी ऐसा एक अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने का अवसर मिले तो हमें उस अवसर के कार्य को शुरू कर देना चाहिए शुरू करना ही एक सबसे बड़ा फैसला होता है शुरू करने के बाद में आने वाली सभी प्रकार की समस्याएं समय और आपकी मेहनत के अनुसार स्वतः ही हल हो जाती है ।

इसलिए हमें यदि कोई भी कार्य करने के लिए मिल रहा है तो सबसे महत्वपूर्ण पहलू यही है कि हम उस कार्य को शुरू करें उस कार्य को हम आगे बढ़ाएं उस कार्य में हम हमारा पहला कदम रखे क्योंकि प्रथम सीडी ही महत्वपूर्ण और कठिन होती है उसके बाद की सीढ़ियां आसान होती चली जाती है इसलिए जिसने भी प्रथम सीडी के ऊपर पैर रखने का साहस दिखाया है इस जीवन में इस दुनिया में इस संपूर्ण विश्व में उसने सदैव जीत हासिल की है।

राठौड़ अपनी रचना मे इस विषय में आपको किसी भी काम को शुरू करने से पहले यह भी संदेश देना चाहते हैं कि इस दुनिया में बहुत सारे काम होते हैं लेकिन हम उसे शुरू करें इससे पहले हमें उस कार्य के बारे में संपूर्ण जानकारी भी लेना बहुत जरूरी है किसी भी प्रकार का कार्य चाहे वह गलत हो चाहे सही हो या किसी भी प्रकार का कार्य जिसके बारे में हमें जानकारी नहीं ली हो और उस कार्य को हम यदि शुरू कर देते हैं तो वह भी हमारा एक सही फैसला नहीं है।

इसलिए ऐसा कार्य जो हमें सही लग रहा हो हमारी समझ में हो हमारे अनुभव में हो हमारे आत्मविश्वास में हो हमारी रुचि में हो तब उस कार्य को हमें शुरू कर देना चाहिए और हम यदि ऐसे कार्य को शुरू नहीं करते हैं तो वह हमारा सबसे बड़ा असफलता का कारण होता है इसलिए किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले हमें उस कार्य के भविष्य के अंदर लेखक के बताए गए पिछले विषयो के अनुसार बहुत सारी ऐसी बातें बताई गई है जिसमें हमें किसी भी कार्य की पहचान करना उस कार्य के अंदर आत्मविश्वास हमारा भविष्य क्या होगा इन सब नीतियों के बारे में सोच विचार करके यदि वह कार्य हमारे लिए उपयोगी है या हमारे

लिए योग्य है तो हमें उस कार्य को जरूर करना चाहिए उस कार्य में हमें शत-प्रतिशत सफलता मिलेगी।

लेकिन ऐसा कोई कार्य जिसे हम कर सकते हैं और हम सिर्फ शुरू करने के डर से उस कार्य को शुरू करने के समय को आगे बढ़ाते रहते हैं और उसमें समय पर समय बिताते रहते हैं तो एक समय जाकर वह कार्य हमारे जीवन से दूर हट जाता है और उस कार्य में मिलने वाली सबसे बड़ी सफलता और उपलब्धि हम छोड़ देते हैं।

इस प्रकार शुरू करने का महत्व कि व्याख्या राठौड़ की रचना किताब नहीं कमाई हूं' में बहुत ही सराहनीय है

अध्याय 22
असफलता क्या है?
(What is failure?)

राठौड़ अपने जीवन के अनुभवों को शेयर करते हुए अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय असफलता क्या है पर युवाओं को संदेश देते हुए कहते हैं कि अपने जीवन में किसी भी कार्य को शुरू नहीं करना ही सबसे बड़ी असफलता है हमारे जीवन में बहुत से कार्य और अवसर हमारे पास होते हैं लेकिन हम उन कार्य में शुरू करने से पहले ही परिणाम के बारे में सोचने लगते हैं और उसी सोचे हुए परिणाम स्वरूप हमारी नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव से हम उस कार्य को कभी शुरू नहीं कर पाते हैं यह हम उस कार्य को शुरू कर देते हैं तो कार्य की प्रारंभिक बाधाओं से डर कर हम उस कार्य को बीच रास्ते पर ही छोड़ देते हैं और वही हमारी असफलता निश्चित हो जाती है।

राठौड़ कहते हैं कि किसी भी कार्य को जब हम शुरू कर देते हैं तो उस कार्य के अंदर हम जब परिणाम तक पहुंचते हैं तो हमारे पास में दो विकल्प हमेशा होते हैं कि उस कार्य के अंदर या तो हमें जीत मिलती है या फिर हमें हार मिलती है लेकिन

राठौड़ यहां पर अपनी किताब के इस विषय के माध्यम से हमें यह बताना चाहते हैं कि यदि हम कोई भी कार्य कर रहे हैं

और वहां पर हमें हार मिल रही है तो वह हमारी असफलता नहीं कहलाती है उस कार्य के दौरान हमारा संपूर्ण रूप से हार मानना हमारी मानसिक रूप से मन की हार मानना ही हमारी वहां पर असफलता होती है हमें किसी भी कार्य को करने पर उसके अंत समय पर जो निर्णय आता है उसके परिणाम को कभी भी हमें सफलता या असफलता का रूप नहीं देना चाहिए।

लेखक यहां पर हमें फिर से यही समझाना चाहते हैं कि कभी भी किसी भी कार्य को हम शुरु करते हैं तो उसके अंदर यदि हम हारते हैं या असफल होते हैं तो वहा हमारा एक अनुभव का गुण विकसित होता है वहां हमे शून्य से ज्यादा ग्रोथ मिलती है लेकिन उस कार्य की हमें जो मिली हुई हार है वह हमारी असफलता नहीं होती है हमें मन से कभी भी किसी कार्य के अंदर हार नहीं माननी चाहिए।

असफलता मनुष्य के जीवन के अंदर भविष्य में आने वाली बड़ी सफलताओं का एक संकेत होती है यदि हम बार-बार असफल हो रहे हैं तो उस समय हमें यह पहचान करना बहुत जरूरी है कि हर असफलता के साथ में हमें बहुत बड़ा अनुभव प्राप्त होता है जो हमें आगे जाकर एक सफल और संस्कारी व्यक्ति बनाता है।

बार-बार असफल होने के बाद ज़ब हम अपने आत्मविश्वास को बनाये रखते हैं तो वहां पर हमें एक बहुत बड़ी सफलता एवं बहुत बड़ी जीत हासिल होती है।

लेखक कहते है कि जीवन में कभी कभी हमारी असफलताएं हमारे धैर्य की परीक्षा लेती है यदि हम धैर्यवान हैं तो हमारी असफलताएं कभी भी असफलता नहीं कहलाती है वह हमें भविष्य में जाकर एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करवाती है।

लेखक यहां पर यह भी कहते हैं कि यदि बार-बार हार के हम बहुत बड़ी जीत प्राप्त करते हैं तो उस जीत और सफलता पर आनंद कि अनुभूति,आसानी से मिलने वाली सफलता से हजारों गुना ज्यादा होति है आसानी से मिली हुई सफलता हमारी सफलता होती है लेकिन उसके अंदर वह आनंद और अनुभूति हमें कभी नहीं होती है जो बार-बार असफल होने के बाद में हमें मिलती है।

असफलता कभी भी मनुष्य का कोई नकारात्मक गुण नहीं होती है असफलता मनुष्य की किसी भी प्रकार की नकारात्मक सोच या फिर किसी भी प्रकार की अन्य क्रिया के द्वारा नहीं प्राप्त होती है असफलता हमारा शुरू किये गए काम का एक परिणाम होति है वह परिणाम कभी-कभार हमारी मेहनत में थोड़ी सी कमी का होना या फिर हमारे मन की हमारी शक्ति हमारे सामर्थ्य हमारी रुचि या हमारे किसी ना किसी ऐसे गुण मे कमी होना या फिर किसी प्रकार का भटकाव होना या फिर किसी भी प्रकार के आत्मविश्वास की कमी होने की वजह से हमें कभी कभी असफलता मिलती है।

लेकिन हमें जितनी बार असफलता मिलती है हमारे अंदर उतने ही गुणों का विकास होता है और आने वाले समय में हम वास्तविकता में एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त कर लेते हैं ।

इस प्रकार राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में असफलता क्या है पर इस प्रकार से की गई व्याख्या बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 23
हम क्या कर रहे है?
(What are we doing?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय हम क्या कर रहे हैं के माध्यम से युवाओं को बहुत अच्छा एक बड़ा संदेश देना चाहते हैं राठौड़ कहते हैं कि आज के युवा को यह सोचना और यह चिंतन करना बहुत जरूरी है कि हम अपने जीवन में क्या कर रहे हैं।

अपने जीवन में एक दूसरे के जीवन को देखते हुए इधर उधर के लोग अपने दोस्त अपने रिश्तेदार को देखते हुए उनके जीवन शैली के बारे में सोचते हुए हम उनके अनुसार ही चलने लगते हैं और हम यह कभी नहीं सोच पाते हैं कि सच में हम क्या कर रहे हैं अपने जीवन के अंदर हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

लेखक कहते हैं कि अपने जीवन के अंदर अपनी आर्थिक और मानसिक संघर्ष की इस सफलता के अंदर यह बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है कि हम अपने अंदर की ताकत अपने अंदर की शक्ति को पहचान कर हमें यह सोचना और यह निर्णय करना बहुत जरूरी है कि वास्तव में हम क्या कर रहे हैं
हम जो कर रहे हैं वह गलत कर रहे हैं कि सही कर रहे हैं या उसका भविष्य क्या है या फिर उसके भविष्य में आने वाले

परिणाम क्या हो सकते हैं यह सोचना हमारे लिए बहुत ही जरूरी और महत्वपूर्ण बात है।

लेखक कहते हैं कि अपने जीवन में किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए हमें सबसे पहले पूर्ण रूप से विकसित किया गया एक प्लान बनाना होता है जिस के अनुरूप ही हम आगे भविष्य की अपनी सबसे बड़ी सफलताओं तक पहुंच पाते हैं और लेखक कहते हैं कि आप क्या कर रहे हैं यदि आपको यह पता नहीं है तो आप भविष्य की वह सबसे बड़ी प्लानिंग कभी नहीं कर सकते हैं और उस प्लानिंग के बिना आप बिना सोचे समझे निरंतर आगे बढ़ते जाते रहते हैं तो आपको अपने जीवन में आने वाली किसी भी प्रकार की कमियां और असफलताओं के बारे में पता नहीं चलेगा आप अपने जीवन के अंदर की कमियों को पहचान नहीं पाएंगे और जब तक हम अपने जीवन की कमियों को पहचान नहीं पाएंगे तब तक हम जीवन के अंदर एक बहुत बड़े उच्चतम मुकाम को हासिल नहीं कर सकते हैं।

इसलिए हमें हमारे जीवन में हमारे अंदर के जो गुण हैं उन गुणों के द्वारा यह पता करना बहुत जरूरी होता है कि हम क्या कर रहे हैं और हम क्या नहीं कर रहे हैं हमें क्या करना चाहिए या हमें क्या नहीं करना चाहिए यह हमारी पहले से ही निर्धारित नीति होनी चाहिए तब हम जीवन में एक बहुत बड़ी सफलता को हासिल कर सकते हैं।

लेखक कहते हैं कि यदि आप अपने आसपास के लोगों को देखकर उनकी बनाई हुई नीतियों के ऊपर चल रहे हैं और वह जैसा कर रहे हैं वैसा ही यदि आप करते जा रहे हैं तो वह आपका एक सही फैसला नहीं है वह आपको इस बात के लिए किसी भी प्रकार की सुरक्षा नहीं देता है कि आप भविष्य में उनकी दूसरों की नीतियों के ऊपर चलकर सफल हो सकेंगे।

इसलिए हमें यह जानना और पहचाना बहुत जरूरी है कि वास्तविकता में हम क्या कर रहे हैं और यदि हम इस प्रकार से इस बात को जानकर हम जीवन में आगे बढ़ते हैं कि हम क्या कर रहे हैं तो लेखक कहते हैं कि हम एक बहुत बड़ी प्लानिंग के साथ में अपने जीवन को आगे बढ़ा सकते हैं और हम हर असंभव सफलता को प्राप्त कर सकते हैं इस प्रकार लेखक अपनी किताब के माध्यम से यह कहना चाहते हैं कि हमें हमारे जीवन के अंदर जो हमारी क्रियाविधि है जो हमारे काम कर्ज है वह सब हमें यह जानने बहुत जरूरी है कि वास्तविकता में वह काम हमारे लिए उपयोगी है या नहीं है।

हम क्या कर रहे हैं इस विषय के माध्यम से लेखक हमें यह बहुत बड़ा संदेश देना चाहते हैं और कहते हैं कि हमारे जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में हमें यह जानना जरूरी है कि हम क्या कर रहे हैं।

हम क्या कर रहे हैं विषय की इस प्रकार से व्याख्या राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में बहुत ही सराहनीय है

अध्याय 24
कल क्या होगा?
(What will happen tomorrow?)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय कल क्या होगा के माध्यम से आज के युवाओं को एक बहुत ही अच्छा और एक बहुत ही बड़ा मैसेज देना चाहते हैं।

राठौड़ अपनी किताब के माध्यम से बताना जाते हैं कि आज के युवा अपनी भागदौड़ भरी इस जिंदगी मे सिर्फ किताब पढ़ने और अंक प्राप्त करने में लगे हुए हैं लेकिन आज शिक्षा के अंदर वह कभी भी यह समझ नहीं पाते हैं कि हमारी शिक्षा का वास्तविक मूल्य क्या है हमारी शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है भविष्य के अंदर कल हमारी शिक्षा के द्वारा हम क्या अर्जित कर सकते हैं हमारे जीवन में हमारे साथ में कल क्या होगा इसके बारे में सोचना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

राठौड़ अपनी किताब के माध्यम से इस विषय के अंदर युवा और संपूर्ण मानव जाति को उसके आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता के अंदर कल क्या होगा की सोच को अहम भूमिका मानते हुए बहुत ही बड़ा महत्व देते हैं ।

इस किताब के द्वारा राठौड़ यह कहते हैं कि यदि हम इस बारे में बिल्कुल भी चिंतित नहीं है कि कल क्या होगा तो हमारे जीवन में हम एक बहुत बड़ी भूल करते हैं हमारे जीवन मे हम आज जो कर रहे होते हैं वही हमारा कल निर्धारित करता है लेकिन हम जो आज कर रहे होते हैं उसमें सदेव हमें सफल और असफल को मध्य नजर रखते हुए हमेशा हमें कल के बारे में सोचना बहुत जरूरी है क्योंकि हम जो भी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जो भी संस्कार प्राप्त कर रहे हैं यह जो भी कुछ आज हम कर रहे हैं वह कल की सफलता के लिए कर रहे हैं और कल की सफलता के लिए यदि हम आज नहीं सोच रहे हैं तो वहां पर हमारे लिए एक बहुत ही बड़ा खतरा हो सकता है या फिर ऐसे बोले कि हमारी भविष्य के अंदर हमारी सफलता के अंदर एक बहुत बड़ी विपदा आ सकती है।

लेखक कहते हैं कि आज का हर युवा अपनी पढ़ाई के बाद में एक अपना सपना सजाए हुए बैठा हुआ है नौकरी नौकरी नौकरी हम हर युवा को हर जगह देखतेहैं कि वह हमेशा एक नौकरी के ऊपर ध्यान केंद्रित करते हैं और अपनी जिंदगी का बहुत सारा समय काल शिक्षा प्राप्त करते-करते और फिर नौकरी करने के लिए या फिर नौकरी की तैयारी के लिए लग जाते हैं।

लेकिन हम कभी यह नहीं सोच सकते हैं कि यदि किसी भी स्थिति में हमारी कल नौकरी नहीं लगी तो हमारा कल क्या होगा हम भविष्य में क्या करेंगे भविष्य में हमारे जीवन में आगे बढ़ने के लिए जीवन में हमें किस प्रकार से हमें धन अर्जित करना होगा किस प्रकार से हमें सफलता मिलेगी इसके लिए आज का युवा बिल्कुल भी नहीं सोच पाता है और हमारे संपूर्ण हिंदुस्तान में यह बहुत बड़ी विडंबना पैदा हो रही है, ना ही हमारी स्कूल की शिक्षाओं में हमे सिखाते हैं कि शिक्षा के साथ में हमें और भी बहुत

कुछ जरूरी है क्योंकि आज हिंदुस्तान की जनसंख्या इतनी ज्यादा हो चुकी है कि हर कोई नौकरी में सक्षम नहीं हो सकता है हमें एक आत्मनिर्भरता की शिक्षा बहुत जरूरी है कल क्या होगा इसके लिए हम किसी भी प्रकार से आत्मनिर्भरता का कोई भी पाठ नहीं पढ़ते हैं।

लेखक कहते हैं कि यदि हम शुरुआती दौर से ही यह सीखना और समझना लग जाए कि हमारा कल क्या होगा हम हमारे भविष्य में आज जो कर रहे हैं उसमें सदैव एक छोटी सी सोच रखते हुए आगे आने वाली असफलता के बारे में भी छोटा सा पांच प्रतिशत विचार अपने दिमाग में रखें और उसके बाद में भी हम यह सोचे कि कल को जब हम बिल्कुल भी किसी भी प्रकार से सफल नहीं हो पाते हैं उस समय हमारा क्या होगा तो उसके लिए हमें आज से ही एक बहुत बड़ी बहुत अच्छी तैयारी करके चलना होगा ।

इसी प्रकार से लेखक यह संदेश देते हुए कहते हैं कि यदि आज का युवा अपने आज के साथ में कल को भी साथ में लेकर चलता है और कल की भी चिंता करके वह हमेशा एक भविष्य निर्धारित करके चलता है तो हमारा युवा आज के इस युग मे आर्थिक और मानसिक आजादी के अंदर सदेव सफल हो पाएगा।

राठौड़ का अपनी किताब 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय कल क्या होगा कि इस प्रकार से व्याख्या बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय25
मानव दिमाग की ताकत
(The power of the human mind)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय मानव दिमाग की ताकत के द्वारा आज के युवाओं और संपूर्ण मानव जाति को मानव के दिमाग की ताकत और मानव के दिमाग की क्षमता के बारे में एक बहुत ही बड़ा और एक बहुत ही अच्छा संदेश देना चाहते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि इस दुनिया के अंदर संपूर्ण पृथ्वीलोक मे मानव के दिमाग को सबसे बड़ा और मानव के दिमाग को सबसे महत्वपूर्ण समझा गया है आज संपूर्ण विश्व के अंदर जितने भी जीव जंतु प्राणी ने जन्म ले रखा है उसके अंदर मानव एक अपने आप में बहुत बड़ी खोज है।

मानव ने अपने दिमाग को जितना इस्तेमाल किया उससे लाखों गुना मानव ने प्राप्त किया है इस दुनिया मे मानव दिमाग ने बहुत बड़े-बड़े आविष्कार और बहुत सारी नई खोज की प्राप्ति की

है मानव शुरुआती काल के अंदर एक आदिमानव हुआ करता था जिसने अपने इस दिमाग की ताकत से आज संपूर्ण विश्व में बहुत बड़े-बड़े आविष्कार किए हैं और आज एक से बढ़कर एक सुख सुविधाएं कि रचना की है।

राठौड़ कहते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में अपने दिमाग के अंदर इतनी क्षमता रखता है कि वह जो चाहे वह प्राप्त कर सकता है इस दुनिया में मानव के लिए कुछ भी असंभव नहीं है आप जो सपना देखते हैं या फिर जो आप सोचते हैं वह सच में संभव होता है क्योंकि हमारी सोच ही हमारे दिमाग की ताकत होती है और हमारा दिमाग जितना सोच सकता है वह सब कुछ इस दुनिया में संभव हो सकता है

और लेखक अपने इस किताब के माध्यम से बताना चाहते हैं कि इस दुनिया के अंदर यदि हम सकारात्मक विचारों और आत्मविश्वास के साथ में कुछ भी दृढ़ संकल्प के साथ में काम करना शुरू करें तो हमारे दिमाग की जो ताकत होती है हमारे दिमाग की जो शक्ति होती है वह इतनी जबरदस्त और इतनी ज्यादा होती है कि हम उस शक्ति और उस ताकत का यदि पांच प्रतिशत भाग भी काम में ले लेते हैं तो उस काम में सफल होने से हमें कोई भी नहीं रोक सकता है।

इतिहास मे किसी भी किताब के किसी भी पन्ने को उठा कर देखिए जहां बहुत बड़े वैज्ञानिकों ने बहुत ही बड़े-बड़े आविष्कार किए हैं जहां पर आप छोटे से लेकर बड़े अविष्कार की कल्पना भी करेंगे तो आप एक समय के लिए अचंभित हो जाएंगे कि ऐसा कैसे संभव है किसी इंसान के लिए शुरू से इस चीज को बनाना और इस अविष्कार को करना।

दिमाग की ताकत बहुत ज्यादा होती है दिमाग बहुत बड़े स्तर पर काम करता है लेकिन हम लोग अपने आसपास की

नकारात्मक शक्तियों के द्वारा हमारे दिमाग की इस ताकत को पहचान नहीं पाते हैं और हम सदैव असफलता को अपने दिमाग में रखते हुए सफलता से हमेशा दूर भागते रहते हैं इसलिए लेखक किताब के इस अध्याय से कहते हैं कि हर इंसान को अपने दिमाग और अपने दिमाग की शक्ति को पहचानना चाहिए हमें इसके लिए योग की भी आवश्यकता होती है हमें हमारे दिमाग से ज्यादा इस दुनिया में कोई सफलता नहीं दिला सकता है इसलिए हमें सदैव अपने दिमाग से काम करना चाहिए और किसी भी प्रकार की नकारात्मक शक्तियों को हमारे दिमाग पर प्रभावी नहीं होने देना चाहिए नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव से हमारे दिमाग की जो ताकत है वह बहुत स्तर तक कम हो जाती है और वास्तविकता में हमारे दिमाग की जो ताकत होती है हम उसका एक छोटा सा भाग भी काम में लें तो हम किसी भी कार्य को इस दुनिया में सम्भव कर सकते हैं।

दुनिया में जब हम इतिहास के अंदर जो काम किए गए हैं उनको देखते हैं तो हमारे द्वारा शुरू किया गया कार्य उनके सामने बहुत ही तुच्छ कार्य होता है और उस कार्य को करने में भी हमें एक बहुत बड़ा पहाड़ जैसा काम नजर आता है जो कि हमारी नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव होता है यदि हमारे दिमाग को सकारात्मक शक्तियों के द्वारा काम में लें तो हम इस दुनिया के अंदर किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं ऐसा लेखक का कहना है।

इस प्रकार राठौड़ अपनी रचना में किताब नहीं कमाई हूं के माध्यम से अपने विषय दिमाग की ताकत में मानव जीवन को उसके दिमाग की ताकत को पहचानने के बारे में प्रेरित करते हुए

कहते हैं कि यदि हम मानव अपने स्वयं के दिमाग की शक्ति के अनुसार किसी भी कार्य को करते हैं तो हम अपने जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष में सफल होंगे ऐसा लेखक का दावा है।

इस प्रकार से मानव दिमाग की ताकत के बारे में रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में इस प्रकार से व्याख्या बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 26
काम पर ध्यान।
(Focus on work)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' मे काम पर ध्यान को अपने जीवन की आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में बहुत महत्वपूर्ण माना है।

राठौड़ अपनी रचना के माध्यम से समस्त युवाओं और समस्त मानव जाति को यह संदेश देना चाहते हैं कि हमारे जीवन के अंदर सफल बनने के लिए हमें किसी ना किसी एक काम को चुनना होता है और उस काम को चुन के उस काम के ऊपर हमें ध्यान करना बहुत जरूरी होता है यदि हम अपने जीवन में अपने द्वारा चुने गए काम पर ध्यान नहीं लगाते हैं या फिर अपने द्वारा शुरू किए गए काम को हम महत्व नहीं देते हैं तो हम उस काम में कभी भी सफल नहीं हो पाते हैं।

राठौड़ यह कहना चाहते हैं कि हमारे जीवन में हमारे द्वारा सफल होने के लिए आगे बढ़ने के लिए या फिर हमारी जीवनशैली को एक बेहतरीन तरीके से जीने के लिए हमें अपने जीवन में किसी ना किसी प्रकार के काम को चुनना होता है वह काम किसी

भी प्रकार का हो सकता है जिसमें हमारी रुचि हो हमारा आत्मविश्वास हो हमारा अनुभव हो इस प्रकार से किसी भी प्रकार के काम को हम शुरू कर सकते हैं।

लेकिन राठौड़ यह कहते हैं कि हम अपने जीवन में काम को कभी भी किसी भी प्रकार से शुरु करते हैं और हमारा उस काम पर ध्यान केंद्रित नहीं है या फिर उस काम को हम वह महत्व नहीं दे रहे हैं जो हमें देना चाहिए तो उस काम के अंदर हमें कभी सफलता नहीं मिल सकती है।

यदि हम हमारे शुरू किए गए या फिर चुने गए काम के अंदर अपना संपूर्ण ध्यान केंद्रित करते हैं और उस काम को ही महत्व देते हैं एवं हमारे जीवन में उस काम के अलावा हम यदि किसी अन्य वस्तु या फिर अन्य सुख सुविधाओं को महत्व नहीं देते हैं जब तक कि हम सफल नहीं होते हैं तो वह काम हमें एक ना एक दिन सफलता जरूर दिलवाता है।

लेखक कहते हैं कि इस दुनिया में बहुत सारे इतने लोग हैं जो अपने जीवन काल में हजारों काम करते हैं लेकिन वह सफल नहीं हो पाते हैं क्योंकि हम हमारे जीवन में किसी कार्य को शुरू करते हैं और उस कार्य के अंदर शुरुआती बाधाओं से डर के हम उस कार्य को छोड़ देते हैं फिर हमारे पास में कोई दूसरा काम आता है जिसको हम चुनने लग जाते हैं और उस कार्य को हम करने लग जाते हैं फिर आगे जाकर उस काम में भी वह बाधाएं आने लग जाती है फिर हम उस काम को छोड़ देते हैं उस काम को हमारे लेवल का या फिर हमारे लाइक का काम नहीं समझते हैं फिर हम तीसरे काम में लग जाते हैं।

ऐसे ही हम हमारे जीवन में भटकते रहते हैं हमारे जीवन में नए-नए काम को करते रहते हैं लेकिन वहां पर हम कभी सफल नहीं हो पाते हैं।

इसलिए लेखक कहते हैं कि आपके द्वारा चुना गया काम चाहे छोटा हो चाहे बड़ा हो चाहे कैसा भी काम हो उस काम पर यदि हम ध्यान देते हैं तो हमें हमारे जीवन में एक काम के अलावा दूसरे काम करने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि वह काम ही हमें हमारे जीवन के संपूर्ण सपनों और संपूर्ण उपलब्धियों तक पहुंचा सकता है इसलिए हमारे संपूर्ण जीवन काल में हमारे द्वारा शुरू किए गए काम से ज्यादा जरूरी है उस काम के ऊपर ध्यान दें यदि आपने कोई भी काम शुरू कर दिया है और उस काम को हमने महत्व नहीं दिया या फिर उस काम के ऊपर हमने ध्यान नहीं दिया तो वह काम हमारे लिए एक मजाक बनकर रह जाता है और आने वाले कुछ ही समय में वह काम हमारे दिमाग से दूर चला जाता है और उस काम में हमारी असफलता निश्चित हो जाती है और कुछ समय बाद में हम एक फिर नया काम पकड़ते हैं और हमारे जीवन की यही शैली बनी रहती है और हम कभी भी जीवन में सफल नहीं हो पाते।

इस प्रकार लेखक कहते हैं कि यदि आप किसी भी काम को शुरू करके उसको महत्व देते हैं और उस काम के ऊपर अपना ध्यान केंद्रित रखते हैं तो आपके जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता निश्चित है।

अध्याय 27
कार्य की स्वतंत्रता।
(Freedom of action)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय कार्य की स्वतंत्रता के द्वारा सभी युवाओं को बहुत अच्छा संदेश देना चाहते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि अपने जीवन में आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में कार्य की स्वतंत्रता होना बहुत ही महत्वपूर्ण है राठौड़ अपने विषय के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि हमारे जीवन में बहुत सारे ऐसे कार्य होते हैं बहुत सारे ऐसे काम होते हैं जिन्हें हमें करने की स्वतंत्रता होना बहुत जरूरी होती है कई बार हम ऐसे कार्य करते हैं जिनके अंदर हम उन कार्य को शुरू कर देते हैं लेकिन उन कार्य को करने के लिए हमारे पास में बहुत सारे दबाव बने हुए रहते हैं।

हमें उस कार्य को किस प्रकार से करना चाहिए किस तरीके से हमें उस कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए यह सब करने का फैसला हमारे हाथ में नहीं होता है कभी कबार हम ऐसे फैसले ले लेते हैं ऐसे कार्य को चुन लेते हैं जिनका संपूर्ण अधिकार हमारे

किसी ऊपर के बड़े वरिष्ठ या फिर हमारे माता-पिता या फिर हमारे किसी यार दोस्त रिश्तेदार या किसी और के पास में होते हैं और हम उस कार्य में कुछ भी बदलाव करना चाहते हैं उस कार्य में हम कुछ भी परिवर्तन करना चाहते हैं उस कार्य में हम किसी भी प्रकार का हमारी इच्छा हमारी शक्ति और हमारे अनुभव के हिसाब से उसमें कुछ भी फैसला लेना चाहते हैं वह हमारे हाथ में नहीं होता है।

तब उस कार्य के अंदर हमारा संपूर्ण आत्मविश्वास और हमारी शक्ति शत प्रतिशत काम नहीं कर पाती है वहां पर हम हमारी संपूर्ण शक्ति का आधा हिस्सा ही वहां पर लगा पाते हैं क्योंकि उस कार्य में हमारी स्वतंत्रता नहीं होती है।

इस प्रकार लेखक कहते हैं कि कार्य की स्वतंत्रता होना बहुत ही जरूरी है क्योंकि जीवन में किसी भी कार्य को हम शुरू करते हैं तो उस कार्य के पूर्ण होने और उस कार्य में सफल होने तक का जो रास्ता होता है उसमें बहुत सारे परिवर्तन आते हैं उसमें बहुत सारी बाधाएं आती है।

और उस समय उस कार्य के परिवर्तन और बाधाओं से लड़ने के लिए हमारे पास में उसका फैसला लेने का अधिकार नहीं होता है तो हम उस कार्य के अंदर अपनी संपूर्ण सामर्थ्य को इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं और उस कार्य के अंदर हम असफलता की ओर निरंतर बढ़ते रहते हैं।

इसलिए लेखक कहते हैं कि आपके द्वारा शुरू किया गया कार्य चाहे छोटा हो चाहे बहुत बड़ा हो किसी भी प्रकार का हो लेकिन उस कार्य में हमारे पास में उस कार्य को करने के संपूर्ण अधिकार होने जरूरी है और उस कार्य की संपूर्ण रूप से स्वतंत्रता होनी जरूरी है यदि हम किसी कार्य को पूर्ण रुप से

स्वतंत्र होकर काम करते हैं तो इस दुनिया के अंदर कितना भी बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा काम हो हम कर सकते हैं और उस कार्य में हम सफल हो सकते हैं।

लेखक कहते हैं कि जीवन में किसी भी कार्य करने के लिए उसमें जो भी सामर्थ्य लगता है जो भी शक्ति लगती है जो भी प्रयास लगता है जो भी अनुभव लगता है वह सब हमें हमारा ही इस्तेमाल करना पड़ता है इसलिए हमें किसी भी कार्य के लिए दूसरे से सिर्फ अनुभव लेने की आवश्यकता होती है दूसरे से सलाह लेने की आवश्यकता होती है लेकिन उस कार्य के अंदर संपूर्ण प्रकार के फैसले लेने का अधिकार हमारे स्वयं के पास में होना बहुत जरूरी है यदि ऐसा नहीं होता है तो उस कार्य में हमारा कितना भी अनुभव हो हमारे पास में कितनी भी सामर्थ्य शक्ति हो कितना भी आत्मविश्वास हो हम उस कार्य को पूर्ण रूप से विकसित नहीं कर सकते हैं और उस कार्य में हम पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाते हैं।

इस प्रकार राठौड़ अपनी किताब मे कार्य की स्वतंत्रता पर कहते हैं कि यदि आप किसी भी कार्य को स्वतंत्रता से करते हैं और उस कार्य को करने के संपूर्ण अधिकार आपके पास में है तो आप अपने जीवन के आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में पूर्ण रूप से सफल होंगे ऐसा लेखक दावा करते हैं।

राठौड़ की रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में कार्य की स्वतंत्रता पर यह विचार और यह व्याख्या बहुत ही सराहनीय है

अध्याय 28
काम की संपूर्ण शिक्षा जरूरी।
(Complete work education is necessary)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में अपने अध्याय काम की संपूर्ण शिक्षा जरूरी के माध्यम से युवाओं को संपूर्ण मानव जाति को एक बहुत ही बड़ा संदेश देना चाहते हैं

राठौड़ अपनी किताब के इस विषय के द्वारा यह बताना चाहते हैं कि मानव की अपने जीवन की आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता में काम की संपूर्ण शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व होता है।

राठौड़ अपनी किताब के माध्यम से बताना चाहते हैं कि हम अपने जीवन काल में बहुत सारे ऐसे कार्य करने लग जाते हैं जिनके बारे में हमें कुछ भी ज्ञान नहीं होता है बिल्कुल भी हमारे को जानकारी नहीं होती है उस काम को शुरू से लेकर अंत तक पूरा करने की शिक्षा के बारे मे हम उस काम के बारे में बिल्कुल

भी कुछ भी नहीं जानते हैं और हम उस कार्य के अंदर अपनी सफलता को खोजते रहते हैं।

लेखक यहां पर यह कहना चाहते हैं कि हम किसी भी प्रकार का काम हो चाहे वह छोटा हो चाहे बड़ा काम हो अपने जीवन के अंदर जो भी हम कार्य कर रहे हैं उसमें हमारा समय और हमारा पैसा और हमारा अनुभव खर्च होता है इसलिए उस काम को करने के लिए उस काम के लिए एक बार हमें सबसे पहले उस काम के बारे में पूर्ण रूप से शिक्षित होना बहुत जरूरी है उस काम को करने के लिए उस काम के बारे में जो भी शिक्षा या ज्ञान की आवश्यकता होती है वह हमें उस काम को शुरू करने से पहले या शुरू करने के साथ ही अर्जित करना चाहिए।

कुछ काम से जुड़े हुए जो भी पहलू होते हैं जो भी नकारात्मकताएं होती है या फिर किसी भी प्रकार की जो बाधाएं आने वाली होती है उन सब बातों से हमें लड़ने के लिए और उस बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें उस काम के बारे में संपूर्ण जानकारी होनी बहुत जरूरी है इसके लिए हमें अपने अनुभव और अपने आसपास के अनुभवी लोगों का इस्तेमाल करके हमें उस काम की शिक्षा लेनी चाहिए यदि आपके पास में कोई ऐसा काम है जिसकी पूर्ण रूप से ट्रेनिंग करवाई जाती हो या फिर पूर्ण रूप से अनुभवी लोगों द्वारा उसकी शिक्षा दी जाती हो तो हमें उन लोगों के माध्यम से उस काम की शिक्षा जरूर लेनी चाहिए और शिक्षा लेकर यदि हम किसी भी कार्य को करते हैं तो वहां पर हमारा अनुभव कुछ ही समय के अंदर शिक्षा लेने के बाद में शून्य से एक बहुत बड़े बढ़ते ग्राफ में हो जाता है और वहां हमारी सफलताओं की आशंकाएं भी तीव्र हो जाती है और उस कार्य में हमें असफलता मिलने के अवसर बहुत कम होते हैं

क्योंकि हम उस काम को करने की संपूर्ण शिक्षा अर्जित करके उस काम को शुरू करते हैं।

यदि काम के अंदर हमने शिक्षा को महत्व नहीं दिया उस काम के बारे में जानकारी हमने नहीं ली तो उस काम के बारे में हमें आगे जाकर बहुत बड़ी हानि भी हो सकती है इसलिए लेखक अपनी किताब के इस विषय के द्वारा हमें यह बताना चाहते हैं कि काम की शिक्षा अपने जीवन में बहुत जरूरी है किसी भी कार्य में हमारा जितना जरूरी समय और पैसा खर्च करना होता है उतना ही जरूरी हमारे लिए उस काम कि शिक्षा होति है शिक्षा ही हमारे काम को हमें आगे बढ़ाती है और शिक्षा से ही हम हमारे काम में सफल होते हैं।

इस प्रकार राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' में काम की शिक्षा को जरूरी समझते हुए और जरूरी बताते हुए कहते हैं कि यदि हम किसी भी कार्य को करने से पहले उसकी संपूर्ण शिक्षा और संपूर्ण ज्ञान लेकर उस कार्य को करते हैं तो उस कार्य में हमारे जीवन कि आर्थिक और मानसिक संघर्ष की सफलता निश्चित है।

इस प्रकार राठौड़ की रचना में काम की शिक्षा जरूरी की इस प्रकार से व्याख्या बहुत ही सराहनीय है।

अध्याय 29
मैं किताब नहीं कमाई हूं मैं कमाई क्या है।
(I am not earning a book, what am I earning)

राठौड़ अपनी रचना 'मैं किताब नहीं कमाई हूं' के माध्यम से लेखक ने संपूर्ण किताब पढ़ने वाले युवाओं और संपूर्ण मानव जाति को अपने बहुत सारे अध्याय और विषयों के द्वारा बहुत ही बड़ा संदेश दिया है यदि हम सब लेखक के द्वारा बताए गए सभी विषयों को पढ़कर उनका अनुसरण करके अपनी जीवनशैली में उतारते हैं तो हमारे जीवन में सफलता निश्चित है।

लेकिन राठौड़ की रचना मै किताब नहीं कमाई हूं मैं राठौड़ अपनी किताब के माध्यम से संपूर्ण युवाओं और संपूर्ण मानव जाति को कमाई करने का भी एक बहुत बड़ा अवसर देते हैं इसकी व्याख्या लेखक ने इस अध्याय के माध्यम से करना चाहते हैं जिसके अंदर हमें संपूर्ण प्रश्न के उत्तर मिलेंगे और हम किस प्रकार से कमाई करेंगे या फिर इस किताब के अंदर कमाई करने का

क्या संसाधन उपलब्ध कराया है यह सारी जानकारी हम इस अध्याय के माध्यम से जान पाएंगे।

लेखक कहते हैं कि आज संपूर्ण विश्व के अंदर बहुत सारे रचनाकरो के द्वारा बहुत सारी अनगिनत किताबें लिखी गई है और हम लोगों के द्वारा पढ़ी गई है।

लेकिन इस किताब के अंदर लेखक का उद्देश्य केवल किताब लिखना और किताब को आप लोगों तक पहुंचाना ही नहीं है जबकि लेखक का सबसे बड़ा उदेश्य इस किताब को लिखने का यह है कि लेखक अपनी किताब के अंदर हमें हमारे जीवन में सफलता के सारे गुणों के बारे में बताते हुए हमें जिस दिन से हम यह किताब खरीदकर अपने घर लाते हैं और यह किताब हम पढ़ना शुरू करते हैं उसी दिन से हमें बहुत बड़ी कमाई होने का अवसर प्राप्त होता है ।

लेखक कहते हैं कि आज तक किसी ने ऐसी किताब नहीं लिखी होगी जो आज लेखक हिम्मत सिंह राठौड़ द्वारा रचना लिखी गई है लेखक कहते है जो भी किताब की कमाई(रॉयल्टी) होंगी वह सारी कमाई लेखक अपने टेक्नोलॉजी सिस्टम के द्वारा इस किताब को आगे विज्ञापित कर किताब का प्रचार कर किताब को बेचने और युवाओं तक पहुंचाने मै लेखक कि मदद करने वाले संपूर्ण लोगों को प्राप्त होगी।

लेखक कहते हैं कि हम इस किताब को हिंदुस्तान और पुरे विश्व में हर युवा और हर मानव के पास में पहुंचाएंगे इसमें लेखक के साथ में हम सब किताब पढ़ने वाले युवाओं का और संपूर्ण मानव जाति का सहयोग रहेगा लेखक यहां पर इस किताब के अंदर हम जितना इस किताब को आगे अपने जानकारों में अपने रिश्तेदारों में अपने दोस्तों में या फिर किसी भी अनजान लोगों में

प्रचार करेंगे उस किताब की चर्चा करेंगे और जब भी वह लोग इस किताब को खरीदेंगे तो लेखक यहां पर हमें एक बहुत अच्छी कमाई करना चालू करेंगे।

लेखक कहते हैं कि बिना संघर्ष बिना मेहनत या बिना कुछ किए इस दुनिया में कुछ भी संभव नहीं है इसलिए हमें इस किताब को पूरे हिंदुस्तान के अंदर अपनी संपूर्ण भारतीय नागरिकता तक पहुंचाना है।

हर युवा शिक्षित नागरिक के हाथ में यह किताब होनी चाहिए क्योंकि यह किताब हमें हमारे भविष्य के अंदर आने वाली चुनौतियों से लड़ना सिखाएगी हमें भविष्य में आने वाली हमारी संपूर्ण असफलताओं से लड़ना सिखाएगी इस किताब के माध्यम से हमारे हिंदुस्तान में हो रही संपूर्ण हीन भावना मानव जाति के अंदर आज के नव युवकों के अंदर जो भी नकारात्मक भावनाएं पैदा हो रही है इस किताब को पढ़ने इन सबसे समाधान मिलेगा इसके साथ में ही यदि हम इस किताब को आगे बढ़ाते हैं इस किताब को हम हमारे लोगों तक विज्ञापित करते हैं हमारे लोगों को भी इस किताब को पढ़ने की इस किताब को खरीदने की प्रेरणा देते हैं तो लेखक यहां पर हमें शुरुआती दौर से ही बहुत अच्छी कमाई का साधन भी उपलब्ध करवाएंगे जिसके बारे में संपूर्ण जानकारी किताब खरीदने के बाद आपको ट्रेनिंग दी जाएगी किताब खरीदने के बाद आपको इसकी संपूर्ण जानकारी दी जाती है आप संपूर्ण जानकारी प्राप्त करके इस किताब को खरीदते हैं और इस किताब को आप पढ़ना शुरू करते हैं।

किताब को खरीदने के बाद में आपको इस किताब के माध्यम से व्यापार करने का और आपके सारे सपने पूरे करने का और एक बहुत अच्छी कमाई करने का अवसर मिलता है ।

लेखक अपनी किताब के अंदर बहुत सारी बातें बताते हैं बहुत सारे अध्याय बहुत सारे विषयों के बारे में आज के युवाओं को संदेश देते हैं और यहां पर लेखक यह कहते हैं कि शिक्षा इस दुनिया में एक ऐसी जगह है एक ऐसी सोच है जहां पर हम उसका कोई मोल नहीं लगा सकते हैं शिक्षा सदैव अनमोल होती है और लेखक यहां पर यह भी कहना चाहते हैं कि हर युवा शुरुआती दौर में क्लास एक से लेकर अनंत क्लासों तक पढ़ता रहता है लेकिन अपने जीवन में सफल कैसे होंगे अपने जीवन में हम कमाई कैसे कर पाएंगे यह सारी विधाएं हम कभी नहीं सीख पाते हैं।

लेखक कहते हैं कि हमारी शिक्षा के अंदर अंक प्राप्ति का महत्व बहुत ज्यादा होता है आज के युवाओं में संस्कार बहुत ही कम नजर आने लग गए हैं क्योंकि हमें हमारे भविष्य के अंदर मिलने वाली सफलताओं में केवल और केवल हमारी अंक प्राप्ति को ही महत्व दिया जाता है आज हमारी शिक्षा के अंदर हमें अंक प्राप्ति की शिक्षा के साथ-साथ हमें हमारे भविष्य में बढ़ती बेरोजगारी पर भी ध्यान देना होगा हमें हमारे जीवन के अंदर आने वाली विपत्तियों से भी लड़ना सीखना होगा हमें हमारे भविष्य में हमारे साथ में क्या होने वाला है या फिर हिंदुस्तान के अंदर या फिर संपूर्ण विश्व के अंदर जब हमारी आवशयकता और क्षमता के अनुसार शिक्षा एक समय समाप्त हो जाती है।

तब हमारी उस शिक्षा समाप्ति के बाद में हमें क्या करना होगा और हम क्या कर सकते हैं इन सब के लिए हमारे जीवन यापन करने के लिए हमारी रोजी-रोटी कमाने के लिए हमारे पास क्या संसाधन होने चाहिए या फिर हमें शुरुआती दौर से हमें किस प्रकार से काम करने का मौका मिलेगा यह शुरुआती दौर से ही हमें यह सिखाया जाए कि हम किस प्रकार से शिक्षा के साथ में कुछ अलग करके बिना समय बर्बादी के और बिना किसी बडी

पूंजी लगाए हम एक बहुत अच्छी शुरुआत करके हम शिक्षा के साथ में व्यापार का भी ज्ञान ले सके और उस व्यापार के माध्यम से हम बहुत अच्छी कमाई भी कर सके।

इस किताब को खरीदने के बाद में आपको बहुत सारे विषयों के पढ़ने के बाद में आपके जीवन के अंदर आने वाली समस्याओं में बहुत बड़े समाधान मिलेंगे और आप जीवन में अपनी आर्थिक और मानसिक आजादी के संघर्ष में सदैव सफल हो पाएंगे।

लेखक यह कहते हैं कि लेखक ने अपनी किताब के माध्यम से बताया है कि हमें शिक्षा के साथ में कमाई करनी भी बहुत जरूरी है क्योंकि आज हिंदुस्तान के अंदर गरीब गरीब होता जा रहा है अमीर अमीर होता जा रहा है लेकिन हम लोगों को नौकरी के अलावा कुछ भी नहीं सिखाया जाता है और इसी वजह से आज हमारे हिंदुस्तान में एक बहुत बड़ी विडंबना पैदा हो चुकी है कि जब हम नौकरी नहीं लगते हैं तो हमारी सरकार को दोष देते हैं हमारे माता-पिता को दोष देते हैं कि हमें अच्छा पढ़ाया नहीं गया हमारी स्कूलों को दोष देते हैं कि वहा शिक्षा अच्छी नहीं थी या फिर हमारी संगत को दोष देते हैं कि हमारी संगत अच्छी नहीं थी ऐसे करके हम जो मुख्य पहलू होता है कि हमें कमाना कैसे सीखना है उस पर ध्यान नहीं रखते हैं और जब हम अंत में जाकर निरउत्साहित होते हैं और असफल होते हैं।

तब हम अपनी बहुत सारी बुरी भावनाओं को पैदा कर लेते हैं जैसे चोरी डकैती आतंकवाद इस प्रकार कि घटनाओ को अंजाम देते है आज का युवा कमाई नहीं होने की वजह से आज का युवा पैसा नहीं होने की वजह से गलत कामों पर भी चल पड़ता है आज हमारे हिंदुस्तान में हिंसा बढ़ते जा रही है उसका सबसे बड़ा कारण यही है कि हमारे पास में कमाई नहीं हो पा रही

है हमारा युवा आज एक सही शिक्षा की ओर नहीं दौड़ रहा है हमारा युवा सिर्फ अंक प्राप्ति की शिक्षा के अंदर व्यस्त है अंक प्राप्ति की शिक्षा के अंदर ही वह अपना संपूर्ण भविष्य देखता है और उसी के अंदर संपूर्ण सफलता देखता है।

लेकिन हमें कभी भी आत्मनिर्भर होने की शिक्षा नहीं सिखाई जाती है हमारे हिंदुस्तान में आत्मनिर्भरता की शिक्षा बहुत जरूरी है हमें हमारे पैरों पर खड़ा होना बहुत जरूरी है यदि हम हमारे पैरों पर खड़े नहीं हो पाते हैं हम आत्म सुरक्षा नहीं कर पाते हैं आत्मनिर्भरता नहीं रख पाते हैं तो हमारे जीवन में सफल होने की शत-प्रतिशत कोई भी जिम्मेदारी कोई भी गारंटी नहीं ले सकता है क्योंकि आज हिंदुस्तान के अंदर हमारी जनता के अंदर हमारी जनसंख्या इतनी ज्यादा गहरी हो चुकी है कि सभी युवाओं को नौकरी दे पाना बहुत मुश्किल है।

इसलिए आज युवाओं को खुद के पैरो पर खड़ा होना और आत्मनिर्भर होना सीखना पड़ेगा लेकिन हमारे युवाओं के पास में सबसे बड़ी समस्या सबसे बड़ी प्रॉब्लम यह भी आकर खड़ी होती है कि हम शिक्षा के साथ में कहीं नौकरी नहीं कर सकते कुछ व्यापार नहीं कर सकते कुछ सीख नहीं सकते कुछ कमा नहीं सकते।

इसी प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के लिए राठौड़ ने अपनी रचना मैं किताब नहीं कमाई हूं के माध्यम से एक बहुत ही बड़ा संसाधन उपलब्ध कराया है जिसमें युवाओं को कुछ भी नहीं करना है किताब खरीदने के बाद में आपको सम्पूर्ण ट्रेनिंग भी दी जाएगी जिससे बहुत बड़ा व्यापार और बहुत बड़ा लाभ यहां मिलने वाला है और बहुत बड़ा आपको यहां से अचीवमेंट्स मिलने वाला है यहां पर आप किताब खरीदने के बाद में जो प्रशिक्षण लेने वाले है उसको अनुसरण करके आप अपने दिन के केवल 30

मिनट से लेकर 60 मिनट भी आप देते हैं तो भी अपनी शिक्षा के साथ में आप बहुत बड़ा व्यापार यहां पर खड़ा कर सकते हैं बहुत बड़ा कमाई यहां से कर सकते हैं।

अपने भविष्य में आने वाली संपूर्ण उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि आज हिंदुस्तान के अंदर जो भी पैसे वाले लोग हैं अमीर लोग हैं वह बहुत बड़े अमीर होते जा रहे हैं उसकी वजह यह है कि अमीरों की जो शिक्षा होती है वह उच्चतम श्रेणी की होती है और उत्तम श्रेणी की शिक्षा की वजह से वह आगे जाकर सफल हो जाते हैं लेकिन एक गरीब और एक मध्यमवर्गीय इंसान मध्यमवर्गीय युवा की जो पढ़ाई होती है वह उच्चतम नहीं हो पाती है क्योंकि उनके परिवारिक समस्याएं उनके परिवार की जिम्मेदारी की वजह से वह शिक्षा नहीं प्राप्त कर पाता है।

उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाने की वजह होता है उनके पैसों में कमी का होना या फिर अपने परिवार में कमाई का कम होना।

इस प्रकार से लेखक इस किताब के माध्यम से आज के युवाओं को इस किताब को खरीदने के बाद में एक बहुत अच्छा कमाई करने का संसाधन भी उपलब्ध करवाते हैं।

राठौड़ कहते हैं कि इस किताब कि हिंदुस्तानी ही नहीं संपूर्ण विश्व के अंदर जितनी इस किताब की प्रतिलिपि बाजार में बिकेगी उस प्रतिलिपि का लाभ इस किताब को खरीदने वाले और इस किताब को बेचने वाले या इस किताब को विज्ञापित करके आगे शेयर करने वाले संपूर्ण युवाओं को और संपूर्ण लोगों को सदैव मिलता रहेगा।

इस प्रकार राठौड़ की रचना में किताब नहीं कमाई हूं एक साधारण किताब नहीं है जो सिर्फ हमें पढ़ने के लिए खरीदनी है।

किताब के माध्यम से हमें किताब खरीदने के बाद में एक बहुत बड़ा व्यापार करने का भी मौका मिलेगा इसके साथ में ही हमें बहुत सारे अच्छे प्रशिक्षण अच्छी शिक्षा दी जाएगी हमें हमारे भविष्य के अंदर हमारे जो सपने हैं वो सपने पूर्ण करने का पूरा आपको एक प्लेटफार्म एक संसाधन उपलब्ध करवाया जाएगा इसके साथ में यदि हम इस किताब को खरीदते है और किताब का प्रचार करते है तो हमारे जीवन के अंदर मध्यम वर्ग के अंदर होने के बावजूद भी हमारी पढ़ाई के साथ-साथ कमाई करके इस किताब के माध्यम से उच्चतम श्रेणी की शिक्षा भी अर्जित कर पाएंगे।

लेखक अपने अंतिम शब्दों के अंदर एक पंक्ति के द्वारा संपूर्ण युवाओं को किताब कि कमाई के बारे में समझाते हुए अपनी किताब का समापन करना चाहते हैं जो कि आप सभी के लिए प्रेरणादायक है।

लेखक कहते हैं

'स्वर्ग क्या है, जानने के लिए मरना पड़ता है'

'मै किताब नहीं कमाई हूं में कमाई क्या है, जानने के लिए किताब को खरीदना पड़ता है'

शुभकामनाएं

इस बहुमूल्य किताब को खरीदने पर और पढ़ने पर आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं और आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए लेखक आप सब को इस किताब के संपूर्ण अध्याय पढ़ने के बाद में अपने जीवन में सफल होने और अपने जीवन में सदैव आगे बढ़कर और अपने जीवन काल में एक बहुत अच्छी कमाई करके अपनी शिक्षा और अपने परिवार को बहुत अच्छे से कमाई करने और अपने परिवार समाज और देश मैं एक अच्छे पूँजीपति और सफल मानव बनने कि कामना करते है।

किताब पढ़ने के बाद में ईश्वर आपको अपनी सामर्थ्य अपनी बुद्धि और अपने बल विवेक सब में सक्षम बनाएं और इस किताब को पढ़ने के बाद में आप एक अच्छे संस्कारी और एक अच्छे धनवान इंसान बने।

किताब को पढ़ने के बाद में संपूर्ण अध्याय को अनुसरण करके आप इस किताब के माध्यम से एक बहुत बड़ा व्यापार करें और एक बहुत बड़े पूंजीपति बने और इस किताब के माध्यम से ही आप अपनी शिक्षा के साथ में अंक प्राप्ति के साथ में एक बहुत अच्छी कमाई करे।

ईश्वर से कामना है आप सभी को किताब पढ़ने के बाद एक सफल इंसान बनाये।